नवम्बर, 2021

उजाला

साक्षरता कार्यक्रम को समर्पित विचार-समाचार पत्रिका

इण्डिया लिटरेसी बोर्ड
साक्षरता निकेतन, लखनऊ-226023

उजाला

वर्ष-66, अंक : 11
नवम्बर, 2021

रवीन्द्र सिंह
आई.ए.एस. (से.नि.)
अध्यक्ष
इण्डिया लिटरेसी बोर्ड
साक्षरता निकेतन, लखनऊ।

सन्ध्या तिवारी
आई.ए.एस. (से.नि.)
निदेशक
इण्डिया लिटरेसी बोर्ड
साक्षरता निकेतन, लखनऊ।

सम्पादकीय सम्पर्क
सम्पादक, उजाला
साक्षरता निकेतन, पोस्ट-मानस नगर,
कानपुर रोड, लखनऊ-226023
दूरभाष : (0522) 2470268
ई-मेल : ujalamasik1957@gmail.com

प्रधान सम्पादक
सन्ध्या तिवारी

सम्पादक
लायक राम 'मानव'

प्रबंध सम्पादक
राम चन्द्र यादव

कम्पोजिंग एवं डिजाइनिंग
गुड्डू प्रसाद

अध्यक्ष की कलम से		01
सम्पादकीय		02
दीपावली के विविध रंग	गौरी शंकर वैश्य 'विनम्र'	03
दीप ऐसा जले	सुधीर मिश्र	07
पटाखे स्वास्थ्य के लिए खतरनाक	अली खान	08
चिनगारी	सुरेश बाबू मिश्रा	10
मौलाना अबुल कलाम आजाद	कुलभूषण टुटेजा	12
हार न मानेंगे	अशोक अंजुम	13
भूख	डॉ० रंजना जायसवाल	14
लंका निसिचर निकट निवासा	ओ० पी० चौरसिया	16
लक्ष्मी और सिक्के	दिनेश प्रताप सिंह 'चित्रेश'	20
डिजिटल त्यौहार	रवि प्रकाश केसरी	22
राष्ट्रभक्त वीरांगना झलकारी बाई	मनोहर पुरी	23
मंगलकारी मिट्टी के दीप	रामगोपाल राही	29
अंधकार से लड़ते दीपक	राम नरेश उज्ज्वल	30
धनतेरस का पर्व	डॉ० विभा खरे	31
लक्ष्मी का वाहन उल्लू	शिवचरण चौहान	34
तमस हरो-तमस हरो	वसीम अहमद नगरामी	37
उड़द दाल की बर्फी	बबिता बसाक	38
सर्वधर्म प्रार्थना-भवन		39

बाल-साहित्य

दो दिये	डॉ० करुणा पाण्डेय	41
फिर से हम स्कूल गए	राम करन	44
खुशबू वाला दीपक	डॉ० अल्का जैन 'आराधना'	45
उछलतू की दिवाली	डॉ० मंजरी शुक्ला	47
साथ तुम्हारा लगे सुहाना	डॉ० पुष्पलता	50
झोपड़ी में खिलखिलाए दीप	ललित शौर्य	51
फिर आई दीवाली है	श्याम नारायण श्रीवास्तव	54
पानी का मूल्य	डॉ० शोभा अग्रवाल चिलबिल	55
नन्हीं	राजकुमार जैन राजन	56
अहा जली कंदील जली	डॉ० रोहिताश्व अस्थाना	कवर-3
लो फिर से आ गई दिवाली	डॉ० देशबन्धु शाहजहाँपुरी	कवर-3
आज दिवाली है आई	डॉ० राकेश चक्र	कवर-4
आ गई दिवाली	चक्रधर शुक्ल	कवर-4

आप ई-पत्रिका के रूप में 'उजाला' के नवीनतम 3 अंकों की पी.डी.एफ. हर महीने इण्डिया लिटरेसी बोर्ड की वेबसाइट- **www.indialiteracyboard.org.** पर पढ़ सकते हैं।

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त किए गए विचारों से सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।

अध्यक्ष की कलम से ...

□ **रवीन्द्र सिंह,** आई.ए.एस. (से.नि.)
अध्यक्ष, इण्डिया लिटरेसी बोर्ड।

नवम्बर का नाम आते ही ज्योति पर्व दीपावली की तस्वीर सामने आ जाती है। यह त्यौहार हमें अंधकार को मिटाने के लिए दीपक जलाने की प्रेरणा देता है। साक्षरता निकेतन की संस्थापिका डॉ0 वेल्दी हॉनसिंगर फिशर ने एक नारा दिया था– 'अंधकार को क्यों धिक्कारें। अच्छा है एक दीप जलाएँ।।' अर्थात अंधकार को कोसने से ज्यादा अच्छा है कि एक दीपक जला दें।

इन दो पंक्तियों के नारे में बहुत बड़ा संदेश छिपा है। सच तो यह है कि अंधकार का कोई अस्तित्त्व नहीं होता। और जिसका कोई अस्तित्त्व नहीं, उसे कोसने या उससे लड़ने का कोई मतलब नहीं। अँधेरा वहीं है, जहाँ उजाला नहीं है। बस एक दीपक जलाकर उजाला कर दो, अँधेरा अपने आप भाग जाएगा। अँधेरा अज्ञान तथा बुराई का प्रतीक है और उजाला ज्ञान तथा अच्छाई का। श्रीमती वेल्दी फिशर ने इसी सिद्धांत पर जीवन भर कार्य किया। उन्होंने अज्ञान तथा बुराई के अंधकार को मिटाने के लिए जन-जन तक ज्ञान का प्रकाश पहुँचाने का मिशन प्रारम्भ किया था। इंडिया लिटरेसी बोर्ड आज भी उनके मिशन को पूरा करने में संलग्न है।

उजाला का यह अंक दीपावली पर आधारित जानकारियों और रचनाओं से परिपूर्ण है। परिचय की श्रृंखला में इस बार साक्षरता निकेतन परिसर में स्थित सर्वधर्म प्रार्थना भवन के बारे में विस्तृत जानकारी दी जा रही है। यह प्रार्थना भवन अपने आप में अद्वितीय और अद्भुत है। आशा है सदैव की भाँति यह अंक भी आपको अवश्य पसंद आएगा।

इसी के साथ आप सभी को ज्योति पर्व दीपावली, कार्तिक पूर्णिमा तथा गुरुनानक जयंती की बहुत-बहुत बधाई एवं हार्दिक शुभकामनाएँ।

रवीन्द्र सिंह
अध्यक्ष

संपादकीय

प्रति वर्ष नवम्बर माह शीत ऋतु की आहट के साथ उपस्थित होता है। इसी माह हम दीपावली का ज्योति पर्व भी मना रहे हैं। यह त्यौहार हमें कई तरह के संदेश देता है। अँधेरे से उजाले की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित करता है। हम एक-दूसरे के लिए सुख-समृद्धि की कामना करते हैं। धनतेरस से लेकर भाई दूज तक चलने वाला यह पर्व मुख्य रूप से लक्ष्मी-पूजन के रूप में जाना जाता है। अमीर-गरीब सभी अपनी-अपनी सुविधा और सामर्थ्य के अनुसार लक्ष्मी जी की पूजा करके धन प्राप्ति और सम्पन्न जीवन की कामना करते हैं।

घर में बेटी का जन्म होता है तो कहते हैं लक्ष्मी आई है। बहू का स्वागत भी लक्ष्मी के रूप में किया जाता है। बेटी-बहू दोनों घर-गृहस्थी की सुख-समृद्धि का प्रतीक हैं। इसलिए दीपावली के अवसर पर धन-वैभव की देवी लक्ष्मी की पूजा तो अवश्य करें, परन्तु घर की लक्ष्मी का भी ध्यान रखें। बहू-बेटियों की उपेक्षा, प्रताड़ना और तिरस्कार करेंगे तो माँ लक्ष्मी कतई प्रसन्न नहीं होंगी।

इस समय कोविड का प्रकोप काफी कम हो गया है, जिसके कारण लोग लापरवाह होते जा रहे हैं। यह अच्छी बात नहीं है। यह लापरवाही भारी पड़ सकती है। राहत की बात यह है कि अब हमारे पास सुरक्षा कवच, अर्थात कोविड वैक्सीन उपलब्ध है। अगर आपने अभी वैक्सीन नहीं ली है, तो तुरन्त ले लें। इससे आप अपने साथ-साथ अपने घर-परिवार और सम्पर्क में आने वाले दूसरे लोगों का भी बचाव कर सकेंगे।

इसी अपेक्षा के साथ आप सभी को ज्योति पर्व दीपावली, कार्तिक पूर्णिमा तथा गुरुनानक जयंती की बहुत-बहुत बधाई एवं हार्दिक शुभकामनाएँ।

सन्ध्या तिवारी
प्रधान सम्पादक

दीपावली के विविध रंग

□ गौरी शंकर वैश्य 'विनम्र'

त्योहारों में दीपावली का विशेष स्थान है। हमारे देश का ही नहीं, विदेशों में भी सबसे अधिक मनाया जाने वाला त्यौहार है। विश्व के लगभग 15 अन्य देशों में भी इस पर्व पर राष्ट्रीय अवकाश होता है। बुराई के प्रतीक रावण पर विजय पाने के बाद श्रीराम के घर लौटने की खुशी में इस त्योहार के मनाने की परंपरा है। दीपावली मनाने के तरीके भले ही भिन्न हों, किन्तु उद्देश्य सभी का एक ही है- हर्षोल्लास के साथ खुशियाँ मनाना। सभी चाहते हैं कि इस पर्व पर उनके घर में खुशियाँ आएँ और दुःख दूर हों। भारत में अलग-अलग प्रदेशों और समाज के लोग अपने-अपने तरीके से इस पर्व को मनाते हैं। आइए देखें, अलग-अलग समाज के लोग दीवाली किस तरह मनाते हैं।

पर्वतीय समाज :

पर्वतीय समाज में त्यौहारों के मनाने के अंदाज ही निराले हैं। दीपावली के दिन पूरे घर में विशेष प्रकार से 'लक्ष्मी के पैर' बनाए जाने की परम्परा है। प्रारम्भ में इसके लिए चावल के आटे का प्रयोग किया जाता था। अब इसका स्थान कागज के स्टिकर और सिंथेटिक रंगों ने ले लिया है। देहरियों पर अलग तरह की आकृति बनाई जाती है। घर के भीतर स्थित मंदिर में भगवान के लिए अलग-अलग तरह से विशेष प्रकार की चौकी बनाई जाती है। इसके बाद उसी पर भगवान को स्थापित किया जाता है। प्रमुख बात यह भी है कि यह त्योहार विशेषतः खाने-पीने के लिए जाना जाता है, लेकिन दीवाली के दिन यहाँ व्रत रखने की भी परंपरा है, और शाम को पूजन के बाद ही कुछ खाते-पीते हैं। इस दिन महालक्ष्मी की प्रतिमा गन्ने से बनाई जाती है। गोवर्धन पूजा, भाई दूज के बाद इस प्रतिमा का

विसर्जन किया जाता है। कहीं-कहीं इसका विसर्जन हरबोधिनी एकादशी पर भी होता है।

उड़िया समाज :

उड़िया समाज में दीवाली मनाने का निराला ढंग है। लोग इस दिन अपने पुरखों की याद करते हैं और उनके लिए खुले आसमान के नीचे दीये जलाते हैं। मान्यता है कि दीवाली के दिन अमावस्या की काली रात को जब कुछ भी दिखाई नहीं देता, तो पुरखों को पृथ्वी तक लाने के लिए रोशनी दिखाएँ, और वे पुरी जगन्नाथ जाकर परिवार के सदस्यों के लिए सुख-समृद्धि की कामना करें। दीपावली पर विशेष प्रकार की मिठाई बनाई जाती है और लक्ष्मी-गणेश का पूजन भी होता है। इस पर्व पर अधिकांश लोग अपने घरों की खिड़की-दरवाजे खुले रखते हैं, जिससे लक्ष्मी जी उनके यहाँ प्रवेश कर सकें।

गुजराती समाज :

गुजरातियों के लिए दीपावली का बहुत महत्त्व है। क्योंकि अगले ही दिन गोवर्धन पूजा से गुड़ी पर्व नामक उनका नया वर्ष शुरू होता है। वस्तुतः दीवाली पर्व की शुरुआत अष्टमी से ही हो जाती है। इस दिन भगवान के पास पानी भरकर रखते हैं। चतुर्दशी (छोटी दीवाली) के दिन साफ-सफाई होने के बाद पूरा परिवार इसी पानी से स्नान करता है। इसके बाद सभी लोग बजरंगबली के दर्शन करने मंदिर जाते हैं। पितृपक्ष में 16 दिन पूजे गए लक्ष्मी-गणेश के सिक्कों का धनतेरस और दीवाली के दिन पूजन करने का विधान है। सिक्कों को दूध और चरणामृत से नहलाया जाता है। लक्ष्मी-गणेश की मूर्ति के अगल-बगल एक के ऊपर एक दीये जलाने का विधान है। इन्हें सुबह तक जलते रहना शुभ माना जाता है।

दीपावली को कई तरह के पकवान बनते हैं। इस दिन विशेष रूप से मोहन थाल (बेसन की बर्फी) बनाई जाती है। इसके बाद लोग एक-दूसरे के घर को नए वर्ष की बधाई देने और मिलने के लिए जाते हैं।

बंगाली समाज :

यहाँ धनतेरस के दिन से ही दीपावली के विशेष आयोजन शुरू हो जाते हैं। पूरे घर की साफ-सफाई होती है। नए बर्तन खरीदे जाते हैं। छोटी दीपावली के दिन झाड़ू को घर से बाहर निकाल कर रख दिया जाता है। भोर में पूजा करते हुए पूरे घर में घूम-घूमकर कहते हैं- अलौखी जाए, लौखी आए, अर्थात पुराने सारे कष्टों का अंत हो और सुख-समृद्धि देने वाली नई चीजें घर में आएँ। इसी दिन चौदह प्रकार के पत्तों को मिलाकर एक तरह का साग (भाजा) बनाया जाता है। रात को चौदह दीपक जलाने की परंपरा है, जिसको बंगाली में 'छोदो प्रौदीप'

कहते हैं। घर में आँगन, कमरे से मुख्य द्वार तक अल्पना (लक्ष्मी के पैर) बनाई जाती है। इसके बाद कलश और नारियल की स्थापना की जाती है। नए फसल के आए धान पर लक्ष्मी की मूर्ति स्थापित करके पूजन का विधान है। इस पर्व पर नारियल की खीर गुड़ डालकर बनाई जाती है। इस दिन पाँच प्रकार की सब्जी बनती है, जिसको मैदे की पूड़ी के साथ खाया जाता है। शाम को आतिशबाजी छोड़ते हैं तथा रात में काली माँ की पूजा की जाती है। यह पूजा करने वाला व्यक्ति पूरे दिन निराहार रहकर पूजा करता है।

मराठी समाज :

मराठी समाज में दीवाली त्यौहार की शुरुआत धनतेरस से हो जाती है। इस दिन तुलसी के पौधे के पास एक दीप जलाया जाता है। इसके साथ ही घर के मुख्य द्वार पर दो दिये जलाने की परंपरा है। घर में नए बर्तन या गहने खरीद कर आते हैं। नरक चतुर्दशी के दिन सुबह उठते ही घर के सभी सदस्यों के नाम से बेसन और आटे को मिलाकर एक-एक दीया बनाया जाता है। फिर लोगों का तिलक किया जाता है, और उसी समय एक छोटा पटाखा या फुलझड़ी उसके सामने छुड़ाया जाता है। फिर सभी लोग मंदिर में दर्शन के लिए जाते हैं। दीवाली के दिन उड़द की दाल, चावल और बेसन से कई तरह के पकवान बनते हैं। लक्ष्मी पूजा में उन्हें पाँच प्रकार के फलों से भोग लगाया जाता है। भैया दूज के अगले ही दिन तुलसी विवाह की भी परंपरा है।

बिहारी समाज :

बिहारी समाज के लोग पूजा में विशेष रूप से फल में सिंघाड़ा और सेब चढ़ाते हैं। घरों में घरौंदा बनाकर मिट्टी की कुलिया में लइया, खिलौने, बताशे और मिठाइयाँ चढ़ाई जाती हैं। लक्ष्मी - गणेश की पूजा होती है। घर की नई वस्तुओं और आभूषण को पूजा में रखा जाता है। मोती चूर और बूँदी के लड्डू भी बनाने का चलन है। मखाने और चावल की खीर बनने के साथ पूड़ी-कचौड़ी और कई प्रकार की सब्जियाँ भी बनाई जाती हैं।

सिख समाज :

सिख समाज में दीपावली को 'बंदी छोड़ दिवस' के रूप में मनाया जाता है। सिख धर्म की शुरुआत के समय गुरुनानक देव जी ने पूरे भारत (अविभाजित काल में) को 22 जोन (संगत) में बाँटा था। यह सभी संगत वर्ष में दो बार बैसाखी और दीपावली पर एकत्र होते थे। एकत्र होने पर धूम - धड़ाका और खुशियाँ मनायी जाती थीं। नगर को खूब सजाया जाता था। जहाँगीर के शासनकाल में सिखों के छठे गुरु को गिरफ्तार कर लिया गया। लंबे समय बाद उन्हें रिहा किया गया। जेल से निकलने के बाद जब वे अमृतसर पहुँचे तो दीपावली

थी। इसलिए इस खुशी के दिन को 'बंदी छोड़ दिवस' नाम दे दिया गया। इस दिन लोग एक-दूसरे को बधाई देते हैं। आज मिश्रित परंपरा वश कुछ लोग पूजा भी करते हैं।

पूर्वांचल समाज :

पूर्वांचल समाज में दीपावली पूजा से ही छठ पूजा की तैयारी शुरू हो जाती है। दीपावली पर साफ-सफाई और प्रकाश फैलाने का विशेष महत्त्व है। परिवार का प्रत्येक सदस्य नए कपड़े पहनता है, सभी देवी-देवताओं की पूजा की जाती है और दीया बारा जाता है। परिवार का मुखिया पहला दीया जलाता है। कुआँ पूजा जाता है। दरवाजे, खिड़की, रसोई में दीप जलाए जाते हैं और गाड़ी की पूजा की जाती है। बच्चे कॉपी-किताब की पूजा करते हैं। इस दिन पढ़ना अनिवार्य है। इस दिन झूरी, पकौड़ी, दही बड़ा, दाल पूड़ी आदि खास व्यंजन बनते हैं।

खत्री समाज :

इस समाज में दीपावली के दिन बहनें, भाइयों के घर विशेष रूप से देहली पूजने के लिए आती हैं। भाइयों का घर सुरक्षित और संपन्न रहे और वंश वृद्धि होती रहे, वे यही मनोकामना करती हैं। घरों में एक बड़ा दीया जलाया जाता है और इसका काजल घर के सभी सदस्यों की आँखों में लगाया जाता है। बहनें भाइयों को मट्ठा, दही, मिठाई, पूजन की सुपारी, कौड़ी भी देती हैं। इस दिन मुख्य रूप से जिमीकंद की सब्जी, चावल की खीर, बेसन की रोटी व पूड़ी बनती है।

केरल समाज :

केरल समाज के लोग धीरे-धीरे अन्य प्रदेशों के रीति-रिवाजों से घुलमिल गए हैं। इसलिए इनकी पूजा पद्धति में विशेष कोई अंतर नहीं है। लक्ष्मी-गणेश की पूजा प्रत्येक घर में की जाती है। बच्चे पटाखे चलाते हैं। घरों की विशेष सजावट होती है। पूजा स्थल पर रंगोली बनाई जाती है। पूजा करते समय परिवार के सभी सदस्य धोती पहनते हैं और त्यौहार धूमधाम से मनाते हैं।

बौद्ध समाज :

बौद्ध लोगों में दीपावली पर चार मास के वर्षावास के समाप्त होने पर दीये जलाने का विधान है। लोग मंदिरों में पूजा करने जाते हैं। बौद्ध भिक्षुओं को भोजन कराया जाता है। लक्ष्मी पूजा नहीं होती, लेकिन घरों में दीपक जलाए जाते हैं। मान्यता है कि सम्राट अशोक के पुत्र-पुत्री इसी दिन श्रीलंका से लौटे थे, इसलिए दीपावली पर उनका स्वागत दीप जलाकर किया जाता है। घरों में पूड़ी-सब्जी और चावल की खीर बनायी जाती है।

☐ 117 आदिलनगर, विकासनगर, लखनऊ 226022
मो.नं.-9956087585

दीप ऐसा जले

□ सुधीर मिश्र

दीप करता है जग के तिमिर का दमन।
दीप ऐसा जले हो प्रकाशित चमन।।

ये अँधेरे की चादर न फैली रहे,
कोर अंतस की कोई न मैली रहे,
बेल विपदाओं की न कसैली रहे,
गंध उपवन की भी न विषैली रहे,
नेह, सद्भाव का सब करें आचरन।
दीप ऐसा जले हो प्रकाशित चमन।।

ये अमावस की रजनी न काली रहे,
दीपमाला से पूनम उजाली रहे,
पल्लवित सबके जीवन की डाली रहे,
सबके घर नित्य-नूतन दिवाली रहे,
दीप से ही है संभव तमस का शमन।
दीप ऐसा जले हो प्रकाशित चमन।।

मन में अज्ञान का तम न ठहरे कहीं,
दाग पीड़ाओं के हों न गहरे कहीं,
दीप आशा के चहुँदिशि सुनहरे कहीं,
रैन शीतल, सुखद भोर पहरे कहीं,
जोड़कर कर प्रभू करते शत-शत नमन।
दीप ऐसा जले हो प्रकाशित चमन।।

दीप से दीप की ज्योति ऐसी जले,
तम का विष वृक्ष कोई न फूले-फले,
हो ये संकल्प हर एक बाधा टले,
सद्प्रयासों का पग-पग सवेरा चले,
हर निशा में छिपी है प्रभा की किरन।
दीप ऐसा जले हो प्रकाशित चमन।।

उर की आशाओं की इसमें बाती धरें,
कामनाओं का फिर तेल इसमें भरें,
तम के दानव स्वयं आत्मघाती करें,
इस तरह दीप लेकर प्रभाती करें,
जगमगाते रहें ये धरा और गगन।
दीप ऐसा जले हो प्रकाशित चमन।।

विश्व-बंधुत्व का दीप ले हाथ में,
हो सकें एक मत, एक पथ साथ में,
भेद-भावों के दानव जो हैं घात में,
जीत पाएँ न हरगिज किसी बात में,
लेखनी से करें कोई ऐसा सृजन।
दीप ऐसा जले हो प्रकाशित चमन।।

□ द्वारा पंकज कुमार तोमर, नाहिली मार्ग,
नई बस्ती, घिरोर,
जनपद-मैनपुरी-205121(उत्तर प्रदेश)
मो.न.-7906958114

पटाखे स्वास्थ्य के लिए बेहद खतरनाक

□ अली खान

हम अपने दैनिक जीवन में किसी उपलब्धि, त्योहार, समारोह या फिर अन्य किसी विशेष जश्न में पटाखों का इस्तेमाल करते आ रहे हैं। यह जानकर बड़ी हैरानी होगी कि हम जो पटाखे उपयोग में लेते हैं, उनमें बड़ी मात्रा में जहरीले रसायनों का इस्तेमाल किया जाता है। दिल्ली उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति एम. आर. शाह और न्यायमूर्ति ए. एस. बोपन्ना की पीठ ने एक टिप्पणी में कहा कि सी.बी. आई. ने जब्त किए पटाखों में बेरियम सॉल्ट जैसे हानिकारक रसायन पाए हैं। निर्माताओं ने भारी मात्रा में बेरियम खरीदा और पटाखों में इन रसायनों का इस्तेमाल किया।

वहीं सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि पटाखों के निर्माण में खतरनाक रसायनों के इस्तेमाल पर सीबीआई की रिपोर्ट बहुत गंभीर और बेहद चिंताजनक है। प्रथम दृष्ट्या बेरियम के इस्तेमाल और पटाखों पर लेबल लगाने पर सुप्रीम कोर्ट के आदेश का उल्लंघन किया गया है।

हम जिस वातावरण में रहते हैं, उसे पटाखे बहुत हद तक प्रभावित करते हैं। पटाखों में मुख्य रूप से सल्फर के तत्त्व की मौजूदगी रहती हैं। इसके अतिरिक्त अन्य कई प्रकार के तत्त्व भी मौजूद रहते हैं, जो पटाखों में रंग-बिरंगी रोशनी पैदा करते हैं। यह एंटीमोनी सल्फाइड, बेरियम नाइट्रेट, एल्यूमीनियम, ताँबा, लिथियम और स्ट्रोंटियम के मिश्रण द्वारा निर्मित होते हैं। ये सभी तत्त्व वातावरण को दूषित करने का काम करते हैं। इन तत्त्वों के वातावरण में बढ़ने से हवा प्रदूषित होती है। इससे हमारा स्वास्थ्य चरमराने लगता है। विभिन्न प्रकार की गंभीर बीमारियों जैसे अल्जाइमर और फेफड़ों के कैंसर से दो-चार होना पड़ता है। इसके अलावा पटाखों से होने वाला शोरगुल हमारे मानसिक स्वास्थ्य को बहुत ज्यादा प्रभावित करता है।

पटाखों से होने वाली ध्वनि हमारे कानों के सुनने की क्षमता पर बहुत अधिक नकारात्मक प्रभाव डालती है। यह ध्वनि प्रदूषण को बढ़ाने का भी काम करती है। पटाखों से उत्पन्न होने वाली ध्वनि का स्तर एक सौ डेसीबल से भी अधिक होता है। जब सौ डेसीबल की ध्वनि हमारे कानों तक पहुँचती है, तब हमारे मन-मस्तिष्क में तनाव की वजह बनती है।

पटाखों में इस्तेमाल रसायन और इससे उत्पन्न शोर न केवल मानव जाति, बल्कि जीव-जंतुओं के जीवन को भी बहुत ज्यादा प्रभावित करता है। एक शोध से पता चला है कि पटाखों से उत्पन्न होने वाली ध्वनि जीव-जंतुओं को काफी असहजता की स्थिति में डाल देती है। वे अंदर तक भयभीत हो जाते हैं।

हाल में एक वीडियो सोशल मीडिया पर खूब शेयर किया जा रहा था, जिसमें शरारती तत्त्व एक जानवर की पूँछ में पटाखे बाँधकर जला रहे हैं। इससे पहले एक दर्दनाक घटना केरल के मलिप्पुरम से सामने आई थी, जहाँ एक हथिनी अपने पेट में पल रहे बच्चे के लिए भोजन की जुगत में जंगलों से रिहायशी इलाकों की ओर दौड़ी चली आई थी। वहाँ कुछ शरारती लोगों ने उसे अनन्नास में पटाखे भरकर खिला दिए थे। इसके ठीक तीन दिन बाद हथिनी और उसके गर्भ में पल रहे बच्चे ने दम तोड़ दिया था।

हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर पटाखों ने काफी नकारात्मक प्रभाव डाला है। आज पूरी दुनिया एक अदृश्य विषाणु के खिलाफ जंग लड़ रही है। इसी दिशा में राजस्थान सरकार ने बेहद संवेदनशील निर्णय लेते हुए राज्य में नागरिकों के स्वास्थ्य की रक्षा हेतु आगामी 31 जनवरी तक सभी प्रकार की आतिशबाजी को बेचने व चलाने पर प्रतिबंध लगा दिया है। गौरतलब है कि कोविड-19 से संक्रमित व्यक्तियों को आतिशबाजी से होने वाले वायु प्रदूषण से काफी नुकसान पहुँचता है। आतिशबाजी से रोग प्रतिरोधक क्षमता कमजोर होती है। ऐसे में राजस्थान सरकार का यह निर्णय बेहद महत्त्वपूर्ण है। अन्य राज्य सरकारों को भी इस दिशा में एडवाइजरी जारी करनी चाहिए।

पटाखों के निर्माण में इस्तेमाल होने वाले रासायनिक पदार्थों पर रोक का लगाया जाना बेहद जरूरी है। यह बेहद चिंताजनक है कि न्यायालय द्वारा पटाखे निर्माण करने वाली फैक्ट्रियों को बार-बार चेताया जा रहा है। बावजूद इसके फैक्ट्रियाँ धड़ल्ले के साथ रसायन युक्त पटाखों का निर्माण कर रही हैं और खुलेआम मार्केट तक पहुँचा भी रही हैं। वास्तव में यह बेहद चिंताजनक है।

□ जैसलमेर, राजस्थान।
मो.नं.-8290375253

चिनगारी

□ सुरेश बाबू मिश्रा

रामवदन ने धान की आखिरी बोरी आँगन में रखने के बाद राहत की साँस ली थी। आज दिवाली थी। चार बज गए थे। सोचा, अब वह भी बच्चों के साथ मिलकर आराम से दीवाली मनाएगा।

रामवदन ने इस साल तीन बीघा खेत बँटाई पर लेकर धान की फसल की थी। आज सुबह से ही खेत पर धान झोर रहा था। दोपहर को जब धानों का बँटवारा हुआ तो उसके हिस्से में पाँच कुन्तल धान आए थे। उसने सिर पर ढो-ढो कर सारे धान अपने छप्पर के नीचे लाकर रख दिए थे। वह बड़ा खुश था। उसके परिवार का, अगली फसल आने तक का खाने का इंतजाम हो गया था।

शाम घिरते ही गाँव में दीवाली का त्यौहार शुरू हो गया। रामवदन ने बच्चों और अपनी घरवाली के साथ मिलकर दीवाली की पूजा की थी। बच्चों ने छत की मुंडेर पर और आँगन में दिए तथा मोमबत्ती जला दी थीं। गाँव में चारों ओर दीवाली की धूम थी। लोग अपने-अपने घरों में पटाखे और अनार चला रहे थे। कुछ बच्चे गली में पटाखे चला रहे थे। रामवदन के बच्चे भी गली में पटाखे देखने चले गए थे।

रामवदन खाना खा चुका था और उसकी घरवाली खाना खा रही थी। दोनों बातें करते जा रहे थे। उनकी खुशी चेहरे से झलक रही थी।

तभी गली में किसी बच्चे ने बोतल में रखकर रॉकेट बम चलाया। बम ऊपर न जाकर सीधे रामवदन के छप्पर पर जाकर गिरा। फूस सूखा होने के कारण छप्पर ने आग पकड़ ली। जब तक रामवदन और उसकी घरवाली कुछ समझ पाते, तब तक छप्पर धू-धू कर जलने लगा। रामवदन और उसकी घरवाली मदद के लिए काफी चीखे-चिल्लाए, मगर पटाखों के शोर में गाँव वाले उनकी चीख-पुकार नहीं सुन पाए।

जब आग की लपटें काफी ऊँची उठने लगी, तब गाँव वाले उनके घर की ओर मदद के लिए दौड़े, परन्तु तब तक बहुत देर हो गई थी।

गाँव वाले मिलकर आग बुझाने में जुट गए। एक घन्टे में आग पर काबू पा लिया गया। लेकिन तब तक रामवदन के घर का सारा सामान आग में जलकर स्वाहा हो चुका था। चार-पाँच महीने हाँड़-तोड़ मेहनत करके जो पाँच कुन्तल धान उसके हिस्से में आए थे, वह भी जलकर राख हो गए थे। गाँव वालों के प्रयास से आग और घरों में नहीं फैल पाई थी।

पूरा गाँव दीवाली की रोशनी से जगमग हो रहा था, मगर रामवदन के घर में घुप्प अँधेरा छाया हुआ था। पटाखे से उठी चिनगारी ने रामवदन की खुशियों को जलाकर राख कर दिया था।

□ ए-373/3, राजेन्द्र नगर, बरेली-243122 (उ0प्र0), मो.नं.-9411422735

इण्डिया लिटरेसी बोर्ड, साक्षरता निकेतन के वर्तमान सदस्य

1.	श्री रवीन्द्र सिंह, आई.ए.एस. (से.नि.)	अध्यक्ष
2.	प्रोफेसर जे० वी० वैशम्पायन	उपाध्यक्ष
3.	श्री एन०के०एस० चौहान, आई.ए.एस. (से.नि.)	कोषाध्यक्ष
4.	न्यायमूर्ति राजमणि चौहान (से.नि.)	सदस्य
5.	पद्म भूषण एवं पद्मश्री श्री चण्डी प्रसाद भट्ट	सदस्य
6.	श्री वाई.एस.के. सेशु कुमार	सदस्य
7.	श्री राजीव निगम, मुख्य अभियन्ता (से.नि.) उ०प्र० जल निगम	सदस्य
8.	श्रीमती नलिनी गर्ग	सदस्य
9.	सचिव, विद्यालयी शिक्षा एवं साक्षरता, भारत सरकार	सदस्य
10.	कृषि उत्पादन आयुक्त, उ०प्र० शासन	सदस्य
11.	अपर मुख्य सचिव, बेसिक शिक्षा, उ०प्र० शासन	सदस्य
12.	कुलपति, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ	सदस्य
13.	कुलपति, जी०बी० पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिकी वि०वि०, पंतनगर	सदस्य
14.	कुलपति, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौ० वि०वि०, कानपुर	सदस्य
15.	कुलपति, नरेन्द्र देव कृषि विश्वविद्यालय, फैजाबाद	सदस्य
16.	अध्यक्ष, भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ, नई दिल्ली	सदस्य
17.	श्रीमती सन्ध्या तिवारी, आई.ए.एस. (से.नि.)	सचिव

मौलाना अबुल कलाम आजाद

□ कुलभूषण टुटेजा

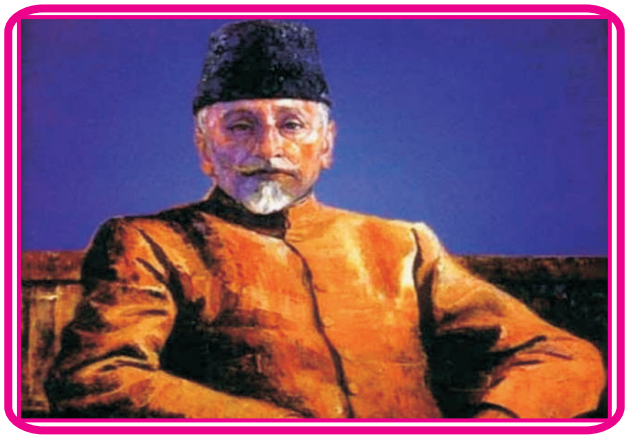

हिन्दू-मुस्लिम एकता के समर्थक मौलाना अबुल कलाम आजाद का जन्म 11 नवम्बर, 1888 को सउदी अरब के मक्का में हुआ था। उनकी माँ अरबी मूल की थीं और पिता मोहम्मद खैरुद्दीन एक फारसी थे। वे कलकत्ता (कोलकाता) के एक प्रसिद्ध मुस्लिम विद्वान थे।

आजाद जब 11 वर्ष के थे, तभी इनकी माता का निधन हो गया। आजाद जी की प्रारम्भिक शिक्षा इस्लामी तौर-तरीके से हुई। उन्होंने दर्शनशास्त्र, इतिहास, गणित, उर्दू, फारसी, अरबी, हिन्दी व अंग्रेजी की शिक्षा प्राप्त की। आमतौर पर जो शिक्षा एक युवक 25 साल की आयु में पूरी करता है, वह आजाद ने 16 वर्ष की आयु में ही पूरी कर ली। वे अत्यधिक कुशाग्र बुद्धि के बालक थे।

आजाद साहब महात्मा गाँधी के सिद्धान्तों के समर्थक थे। उन्होंने अलग मुस्लिम राष्ट्र के सिद्धान्त का विरोध किया। हिन्दु-मुस्लिम एकता के लिए भी लगातार कार्य किया। उन्होंने 1905 के बंगाल के विभाजन का भी विरोध किया था। इसमें उन्हें श्री अरविन्दो और श्याम सुन्दर चक्रवर्ती जैसे क्रान्तिकारियों का समर्थन मिला।

शिक्षा प्राप्त करने के बाद मौलाना साहब पत्रकर बने और 1912 में उन्होंने एक उर्दू पत्रिका 'अल हिलाल' का प्रकाशन किया। उनका मुख्य उद्देश्य मुस्लिम युवाओं को क्रान्तिकारी आन्दोलन के प्रति उत्साहित करना और हिन्दू-मुस्लिम एकता पर बल देना था। गाँधी जी के असहयोग आन्दोलन में भी उन्होंने सक्रिय भूमिका निभाई।

वे स्वतंत्र भारत के पहले शिक्षामंत्री बने। उन्होंने 11 वर्षों तक राष्ट्र की शिक्षा नीति का मार्ग-दर्शन किया। भारतीय औद्योगिक संस्थान (आई.आई.टी.) एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी)

की स्थापना इन्होंने ही की। इसके साथ ही शिक्षा एवं संस्कृति को विकसित करने के लिए 1953 में संगीत नाटक अकादमी, 1954 में साहित्य अकादमी तथा 1954 में ही ललित कला अकादमी की स्थापना की।

केन्द्रीय सलाहकार शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष होने पर सरकार से 14 वर्ष तक के बच्चों के लिए निःशुल्क शिक्षा एवं अनिवार्य शिक्षा, कन्याओं की शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण, कृषि शिक्षा एवं तकनीकी शिक्षा जैसे सुधारों की वकालत भी की। इस प्रकार आधुनिक शिक्षा तथा शैक्षिक सुधारों का श्रेय अबुल कलाम जी को जाता है।

हिन्दू मुस्लिम एकता के समर्थक एवं शिक्षा के क्षेत्र में सराहनीय कार्य करने वाले मौलाना अबुल कलाम आजाद का निधन 22 फरवरी, 1958 को दिल्ली में हुआ। मरणोपरान्त उन्हें वर्ष 1992 में भारत रत्न की उपाधि से सम्मानित किया गया। वे आज हमारे बीच नहीं हैं, परन्तु आजादी के संघर्ष तथा शिक्षा जगत में उनके योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकेगा।

□ कैसरबाग, लखनऊ, **मो.न.**-9450641924

हार न मानेंगे

□ अशोक अंजुम

हार न मानेंगे, कभी हम हार न मानेंगे,
कर के दिखला देंगे मन में जो भी ठानेंगे!

चलते जाने से होती है जीवन की पहचान,
जो कोशिश करता, कहलाता वह सच्चा इंसान,
रुक जाने को जीवन का आधार न मानेंगे!
हार न मानेंगे, कभी हम हार न मानेंगे !!

जीवन की सच्चाई हमको सदा पकाती हैं,
कंचन जैसा चमकदार व्यक्तित्व बनाती हैं,
राहों की ठोकर को हम बेकार न मानेंगे!
हार न मानेंगे, कभी हम हार न मानेंगे!!

समतल राहों पर तो कोई भी चल सकता है,
पार चुनौती जो करता मीठे फल चखता है,
सुविधाओं को जीवन का सिंगार न मानेंगे!
हार न मानेंगे, कभी हम हार न मानेंगे!!

बिखर गया हर सपना उसका, जीवन वहीं रुका,
अंधकार से डरकर जग में कोई अगर झुका,
अरे अँधेरे, हम तेरी इक बार न मानेंगे !
हार न मानेंगे, कभी हम हार न मानेंगे !!

नाम उसी का हुआ कि जिसने भी संघर्ष किया,
अमृत औरों को बाँटा, खुद हँसकर जहर पिया,
औरों की खातिर जीना दुश्वार न मानेंगे !
हार न मानेंगे, कभी हम हार न मानेंगे !!

□ सम्पादक अभिनव प्रयास, स्ट्रीट दो, चंद्र विहार कॉलोनी, (नगला डालचंद) क्वारसी बायपास, अलीगढ़-202002, **मो.न.**-9258779744

भूख

□ डॉ० रंजना जायसवाल

"माँ, कुछ खाने को दो न ! दो दिन हो गए, पेट में अन्न का एक दाना भी नहीं गया। बहुत भूख लगी है।"

मोहन सुबह से खाने की रट लगाए था। पर रमिया करती भी तो क्या, सारे बर्तन टटोल चुकी थी। मोहन के बापू भी न जाने कहाँ रह गए।

"तू चिंता न कर। तेरे बापू आते ही होंगे। साहूकार से पैसे लेने गए हैं। फिर तेरी पसन्द की हर चीज बनाऊँगी।"

"तीन दिन हो गए माँ, बापू को शहर गए हुए। कब आएँगे बापू ?"

"इस साल बड़ी अच्छी फसल हुई है। तेरे बापू कह रहे थे साहूकार अच्छा पैसा देगा। बस आते ही होंगे। तू चिंता न कर।"

पर अब तो रमिया को भी चिंता होने लगी थी। तीन दिन हो गए थे मोहन के बापू को शहर गए हुए। मोहन भूख से बिलबिला रहा था। भूख तो उसे भी बहुत लगी थी, पर रमिया बगल वाली काकी से मुट्ठी भर आटा ले आई। सबका तो एक ही जैसा हाल था। रमिया ने आटे को पानी में घोलकर मोहन को दे दिया। वह गुस्से से चीख उठा।

"नहीं अब और नहीं। कितने दिन हो गए भरपेट खाये हुए। कुछ दो न माँ !"

मोहन की आँखें दर्द से भीग गई। तीन दिन में उसका चेहरा कितना छोटा सा हो गया था। कुछ दिन पहले उसको टी.बी. निकल आई थी। डॉक्टर ने अच्छे से इलाज कराने को कहा था।

"रमिया ! दवाई समय-समय पर देती रहना और इसे अच्छा खाना खिलाते रहना। देखो, कमजोर शरीर बीमारियों का घर होता है।"

अच्छा खाना कहाँ से लाती वह। यहाँ जीने के लिए खाना मुहैया करना भी

मुश्किल था। फिर आधी रात में मोहन की तबीयत बिगड़ती चली गई। रमिया दौड़ कर बगल वाले काका को बुला लाई। इतनी रात में वह कहाँ जाती। घबराहट से उसके हाथ-पाँव फूलने लगे। गाँव में हल्ला मच गया, न जाने कौन भला मानुष वैद्य जी को ले आया। रमिया की झोपड़ी के आगे लोगों की भीड़ जमा होने लगी। बाहर एक अजीब सा कोलाहल मचा हुआ था, पर अंदर सब कुछ शांत हो रहा था। वैद्य जी ने सबको चुप होने को कहा। मोहन की पतली सी कलाई को थामे वैद्य जी, उसके जीवित होने के सबूत को ढूँढ़ने की कोशिश करने लगे। उनके चेहरे पर चिंता की लकीरें उभर आईं।

मोहन की साँसें उखड़ने लगीं। पसलियाँ चलने लगीं। मोहन की नब्ज डूब रही थी। वह बेहोशी में चिल्ला रहा था– "माँ देखो न, बापू आ गए, बापू मेरे लिए कितना सारा सामान लाए हैं, पूरी, कचौरी, जलेबी और वो बड़ी वाली बालूशाही भी।"

रमिया हाथ जोड़े आँखें मूँदे अपने इष्ट को मनाने में जुटी थी। पर न जाने क्यों, आज ऊपर वाला भी निर्मोही हो गया था। सच कहते हैं मोहन के बापू गरीबों की सुनता कौन है। सूरज की पहली पौ फटने के साथ ही मोहन का जीवन डूब गया।

अखबार के पहले पन्ने पर मोटे-मोटे अक्षरों में लिखा था। इस साल रिकॉर्ड तोड़ फसल हुई, सरकार निर्यात करने की सोच रही है। वहीं अखबार के तीसरे पन्ने पर दो खबरें और भी थी। भूख से बच्चे की मौत और उसी गाँव के एक शख्स ने गाँव के बाहर पेड़ से लटक कर अपनी इहलीला समाप्त की। लाश दो तीन दिन पुरानी बताई जा रही थी।

आँगन में बेटे और पति की लाश पड़ी थी। रमिया की आँखों के आँसू सूख चुके थे। वह एकटक अपने पति और बेटे को देख रही थी। भगवान ने उसका सिंदूर और कोख दोनों उजाड़ दी थी।

"बेचारी !" भीड़ में से एक आवाज आई। बेचारी ही तो थी वह। बचपन में गरीबी के कारण पिता को खोया। और अब भूख से सन्तान और पति को। रमिया पत्थर हो गई थी। आँसू का एक कतरा उसकी आँखों से न टपका।

"रो ले बिटिया ! कब तक ऐसे बैठी रहेगी। रो ले, जी हल्का हो जाएगा।"

काकी ने उसके कंधे पर हाथ रखकर हिलाया। पर रमिया धप्प की आवाज के साथ जमीन पर लुढ़क गई। उसकी साँसें तो कब की टूट चुकी थी।

□ लाल बाग कॉलोनी, छोटी बसही, मिर्जापुर-231001
मो.नं.-9415479796

लंका निसिचर निकट निवासा

□ ओ० पी० चौरसिया

कहते हैं जहाँ हर तरफ बुराई होती है, वहाँ कहीं न कहीं अच्छाई भी होती है। लंका में दुर्दान्त राक्षसों के बीच कुछ अच्छे लोग भी थे। राम चरित मानस के सुन्दर काण्ड में गोस्वामी तुलसीदास जी की एक चौपाई है–

लंका निसिचर निकट निवासा।
इहाँ कहाँ सज्जन कर बासा।।

इस चौपाई में कहा गया है कि लंका में तो निशिचरों का निवास है। यहाँ साधु पुरुष (सज्जन) का निवास कहाँ हो सकता है।

इस चौपाई में इस बात का संकेत है कि लंका नगरी में सज्जनों का रहना मुश्किल है। लेकिन सुन्दर काण्ड को पढ़ने से कई स्थानों पर सज्जन पुरुषों तथा महिलाओं के दर्शन होते हैं।

सर्वप्रथम श्री हनुमान जी से राक्षसी सुरसा की भेंट होती है। आपस में दोनों ने शरीर को घटाने-बढ़ाने का स्वरूप दिखाया। अंत में वह राक्षसी हार मान गई। उसने हनुमान को आशीर्वाद दिया–

राम काजु सबु करिहहु,
तुम्ह बल बुद्धि निधान।।
आसिष देइ गई सो,
हरषि चलेउ हनुमान।।

पुनः सुरसा राक्षसी ने हनुमान जी से कहा कि तुम श्री राम चन्द्र जी के सब कार्य

करोगे, क्योंकि तुम बल-बुद्धि के निधान हो। वह अशीर्वाद देकर चली गई। यह सुनकर हनुमान जी हर्षित होकर चल पड़े। यहाँ प्रथम सज्जन राक्षसी सुरसा के दर्शन होते हैं।

दूसरी सज्जन महिला राक्षसी के दर्शन होते हैं, जिसका नाम लंकिनी है। हनुमान जी की भेंट लंकिनी से होती है। हनुमान जी ने एक मुक्का मारा, जिससे वह खून की उल्टी करती हुई पृथ्वी पर लुढ़क गई। सँभल कर उसने हनुमान जी से कहा कि रावण को जब ब्रह्मा जी ने वरदान दिया था, तब चलते समय उन्होंने मुझे राक्षसों के विनाश की यह पहचान बता दी थी कि जब तू बंदर के मारने से व्याकुल हो जाए, तब तू समझ लेना कि राक्षसों का विनाश होने ही वाला है। हे तात ! मेरे बड़े पुण्य हैं, जो मैं श्री रामचन्द्र के दूत को इन नेत्रों से देख पाई।

जब रावनहि ब्रह्म बर दीन्हा।
चलत बिरंचि कहा मोहि चीन्हा।।
बिकल होसि तैं कपि के मारे।
तब जानेसि निसिचर संहारे।।
तात मोर अति पुण्य बहूता।
देखेउँ नयन राम कर दूता।।

सीता माता का पता लगाते-लगाते हनुमान जी को एक सुन्दर महल दिखाई दिया। वहाँ भगवान का एक मंदिर अलग से बना हुआ था। वह महल श्री राम के आयुधों (धनुष-बाण) के चिह्नों से अंकित था। उसकी शोभा का वर्णन नहीं किया जा सकता। वहाँ नए-नए तुलसी के वृक्ष-समूहों को देखकार कपिराज हनुमान जी प्रसन्न हुए। हनुमान जी सोचने लगे कि लंका में तो राक्षसों के समूह का निवास है। यहाँ सज्जन पुरुष का निवास कहाँ ?

हनुमान जी मन में तर्क करने लगे। उसी समय विभीषण जी जाग गए।

मन महुँ तरक करैं कपि लागा।
तेहीं समय विभीषनु जागा।।

विभीषण जी जागते ही राम नाम का स्मरण करने लगे। हनुमान जी ने उन्हें सज्जन के रूप में पहचान लिया और हृदय में हर्षित हुए। हनुमान जी ने विचार किया कि इनसे हठ करके परिचय करूँगा। क्योंकि साधु से कार्य की हानि नहीं होती, बल्कि लाभ ही होता है।

ब्राह्मण का रूप धर कर हनुमान जी ने उन्हें वचन सुनाए। सुनते ही विभीषण जी उठकर वहाँ आए। प्रणाम करके कुशल पूछी ओर कहा कि हे ब्राह्मण देव ! अपनी कथा बुझा कर कहिए–

राम राम तेहि सुमिरन कीन्हा।
हृदयँ हरष कपि सज्जन चीन्हा।।
यहि सन हठि करिहहुँ पहिचानी।
साधुते होइ न कारज हानी।।

करि प्रनाम पूँछी कुसलाई।
बिप्र कहहु निज कथा बुझाई।।

तब हनुमान जी ने भी राम जी की सारी कथा सुनाकर अपना नाम बताया। सुनते ही दोनों के शरीर पुलकित हो गए और श्री राम के गुण समूहों का स्मरण कर दोनों के मन प्रेम और आनन्द में मग्न हो गए। विभीषण ने कहा– "हे पवनसुत। मेरी रहनी सुनो। मैं यहाँ वैसे ही रहता हूँ, जैसे दाँतों के बीच बेचारी जीभ। मुझे अनाथ जानकर सूर्य कुल के नाथ श्री रामचन्द्र जी क्या कभी मुझ पर कृपा करेंगे।

तब हनुमंत कही सब
राम कथा निज नाम।
सुनत जुगल तन पुलक मन
मगन सुमिरि गुन ग्राम।।

सुनहु पवन सुत रहनि हमारी।
जिमि दसनन्हि महुँ जीभ बिचारी।।
तात कबहुँ मोहि जानि अनाथा।
करिहहिं कृपा भानु कुल नाथा।।

हनुमान जी ने कहा– "हे भाई ! सुनो, मैं जानकी माता को देखना चाहता हूँ।"

विभीषण जी ने माता जी के दर्शन की सब युक्तियाँ कह सुनाई। तब हनुमान जी उनसे विदा लेकर चल पड़े।

तब हनुमंत कहा सुनु भ्राता।
देखी चहउँ जानकी माता।।
जुगुति विभीषण सफल सुनाई।
चलेउ पवन सुत बिदा कराई।।

इस प्रकार श्री राम भक्त विभीषण जी की भेंट हनुमान जी से हुई।

सुन्दर काण्ड में जब आगे बढ़ते हैं तो त्रिजटा नाम की राक्षसी से भेंट होती है। उसकी रामचन्द्र जी के चरणों में अगाध प्रीति थी। वह विवेक एवं ज्ञान में निपुण थी। सीता जी ने उसके गुणों को देखकर कहा– "हे माता ! तुम मेरी विपत्ति की संगिनी हो।"

सीता जी के वियोग भरे वचन सुनकर त्रिजटा ने उनके चरण पकड़ कर समझाया और प्रभु राम का प्रताप, बल और सुयश सुनाया।

उसने कहा– "हे सुकुमारी। सुनो, रात्रि के समय आग नहीं मिलेगी। ऐसा कहकर वह अपने घर चली गई।"

त्रिजटा सन बोली कर जोरी।
मातु बिपति संगिनि तैं मोरी।।
सुनत बचन पद गहि समुझाएसि।
प्रभु प्रताप बल सुजसु सुनाएसि।।
निसि न अनल मिल सुनि सुकुमारी।
अस कहि सो निज भवन सिधारी।।

लंका नगरी में हनुमान जी अपनी लीला करके प्रभु श्रीराम के पास वापस चले गए। इधर सारी लंका घबड़ा गई। यहाँ तक कि रावण की पत्नी मंदोदरी ने अपने पति

को समझाया। लेकिन घमंडी रावण ने उसकी एक न सुनी।

दूतियों से नगर वासियों के वचन सुनकर मंदोदरी बहुत व्याकुल हो गई। वह हाथ जोड़कर एकान्त में अपने पति के चरण पकड़ कर नीति से युक्त वाणी बोली– "हे प्रियतम ! श्री रामचन्द्र जी से विरोध करना छोड़ दीजिए। हे प्यारे स्वामी। यदि भला चाहते हैं तो अपने मंत्री को बुलाकर उसके साथ उनकी पत्नी सीता जी को भेज दीजिए।

हे नाथ ! सुनिए, सीता को दिए (लौटाए) बिना शंकर जी एवं ब्रह्मा जी के किए भी भला नहीं हो सकता।"

मंदोदरी की नीति से सनी बातें सुनकर रावण ने उसे गले से लगा लिया और उसके प्रति ममता बढ़ा सभा में चला गया। इधर मंदोदरी मन में चिन्ता करने लगी कि पति पर विधाता प्रतिकूल हो गए हैं।

दूतिन्ह सन सुनि पुर जन बानी।
मंदोदरी अधिक अकुलानी।।
रहसि जोरि कर पति पग लागी।
बोली वचन नीति रस पागी।।
सुनहु नाथ सीता बिनु दीन्हें।
हित न तुम्हार संभु अज कीन्हें।।
अस कहि बिहँसि ताहि उर लाई।
चलेउ सभा ममता अधिकाई।।
मंदोदरी हृदयँ कर चिन्ता।
भयउ कंत पर बिधि विपरीता।।

इस प्रकार मंदोदरी रावण की पत्नी होते हुए भी उसने रामचन्द्र जी के गुणों का बखान किया। इससे प्रतीत होता है कि वह अंदर से श्रीराम की भक्त थी।

प्रभु श्रीराम की उदारता देखते ही बनती है। जब विभीषण को रावण ने लात मारकर लंका से भगा दिया, तब श्रीराम ने उसे गले गला लिया और कहा– "हे लंकापति सुनो, तुम्हारे अंदर बहुत से अच्छे गुण हैं। इससे तुम मुझे अत्यन्त प्रिय हो। जगत में मेरा दर्शन अमोघ है।" ऐसा कह कर उन्होंने विभीषण का राजतिलक कर दिया।

आकाश से देवताओं ने पुष्पों की अपार वर्षा की।

जदपि सखा तव इच्छा नाहीं।
मोर दरस अमोघ जग माहीं।।
अस कहि राम तिलक तेहि सारा।
सुमन बृष्टि नभ भई अपारा।।

शिव जी ने जो सम्पत्ति रावण को दसों सिरों की बलि देने पर दी थी, वही सम्पत्ति श्री रघुनाथ जी ने विभीषण को सकुचाते हुई दे दी।

□ 587ए/491, गाँधी नगर, सी. ब्लाक, तेलीबाग, लखनऊ-226025
मो.नं.-6386227559

लक्ष्मी और सिक्के

□ दिनेश प्रताप सिंह 'चित्रेश'

दीपावली मनाने को लेकर प्रसंग तो कई हैं, मगर मुख्य रूप से यह लक्ष्मी-पूजा का पर्व है। दीवाली की रात परिवार में लक्ष्मी की पूजा का आयोजन होता है। पूजा के समय लक्ष्मी की मूर्ति के सामने कुछ पैसे जरूर रखे जाते हैं। क्योंकि पैसा, यानी मुद्रा लक्ष्मी का मूर्त रूप है।

आजकल मुद्रा अधिकतर कागज के नोट के रूप में प्रचलित है। एक, दो, पाँच और दस रुपए के धातु के सिक्के भी चलन में हैं। पुराने समय में मुद्रा सिक्कों के रूप में ही ढाली जाती थी। तब के सिक्के सोने, चाँदी और ताँबे के होते थे। हर राजा की अपनी मुद्रा होती थी, जिस पर राज-चिह्न, देवी-देवता, राजा-रानी, वाद्ययन्त्र, पशु वगैरह का अंकन होता था।

प्राचीन काल में कई ऐसे राजा हुए हैं, जिनके सिक्कों पर लक्ष्मी विराजमान हैं। इस परम्परा की शुरुआत किस राजा ने की थी, यह तो पता नहीं। किन्तु अभी तक लक्ष्मी से युक्त जो सबसे पुराने सिक्के मिले हैं, वह कौशाम्बी के शासक विशाखदेव और शिवदत्त के हैं। यह सोने के सिक्के हैं और लक्ष्मी इसमें खड़ी मुद्रा में प्रदर्शित हैं। दोनों तरफ से दो हाथी उन्हें स्नान करा रहे हैं। इतिहासकारों के मतानुसार यह सिक्के ईसा पूर्व तीसरी सदी के हैं।

ईसा पूर्व पहली सदी के अयोध्या नरेश वासुदेव के सिक्कों पर भी लक्ष्मी का अंकन इसी रूप में मिलता है। पश्चिमोत्तर सीमांत के राजा एजिलिसेस के कुछ सिक्के प्राप्त हुए हैं, जिसके एक तरफ कमल पर खड़ी लक्ष्मी को दो हाथी सूड़ों की छाया देते दिखाये गए हैं। यह सोने का सिक्का है और इतिहासकारों के अनुसार यह ईसा पूर्व पहली सदी के आरम्भ का है। उल्लेखनीय है कि एजिलिसेस हिन्दू न होकर शक जाति का विदेशी शासक था।

पहली सदी के उत्तरार्द्ध में उत्तर भारत कुषाण शासकों के अधीन हो गया था। कुषाण ईरानी थे। कुषाण शासकों ने ईरानी देवी-देवताओं के अलावा शिव समूह और लक्ष्मी रूपी 'आरदोक्षी' को भी अपने सिक्कों पर स्थान दिया था। कुषाण राजा कनिष्क के सोने और ताँबे के सिक्के मिले हैं, जिसके मुख्य भाग पर ईरानी वेशभूषा में राजा का अंकन है। इसके दूसरे भाग पर कण्ठ और भुजाओं में आभूषण पहने हुए साड़ी-चोली में धन-देवी की कलात्मक छवि है। देवी की मूर्ति के नीचे ईरानी लिपि में 'आरदोक्षी' लिखा है। आरदोक्षी मूलतः

कुषाणों की लक्ष्मी हैं। बाद में कुषाण वंश के राजा हुविष्क ने भी 'आरदोक्षी' के अंकनयुक्त सिक्के चलाए।

गुप्तकाल में लक्ष्मी के अंकनयुक्त कई प्रकार के सिक्के प्राप्त होते हैं। गुप्त शासक वैष्णव धर्म के अनुयायी थे। इसलिए उनके सिक्कों पर विष्णुप्रिया लक्ष्मी की बहुतायत स्वाभाविक है। चन्द्रगुप्त प्रथम ने सन् 319 में सोने का एक विशेष सिक्का ढलवाया था। सिक्के के अगले भाग पर चन्द्रगुप्त प्रथम अपनी रानी कुमार देवी के साथ अंकित हैं और पीछे की ओर सिंह पर सवार लक्ष्मी के पैरों के नीचे कमल का चित्रण है।

समुद्रगुप्त ने अपने शासनकाल में सोने के छह प्रकार के सिक्के ढलवाये थे। इसमें 'ध्वजधारी' मुद्रा पर एक तरफ गुप्त राजाओं का राजचिह्न 'गरुणध्वज' तथा दूसरी तरफ सिंहासन पर विराजमान लक्ष्मी चित्रित हैं। समुद्रगुप्त के पुत्र चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने अपने शासनकाल में सोने के अलावा चाँदी और ताँबे के सिक्के भी चलाए। इन सिक्कों पर सिंहासन पर बैठी लक्ष्मी अंकित हैं, जिसके नीचे 'श्री विक्रमः' लिखा है।

कुमारगुप्त की भी तीन प्रकार की स्वर्ण मुद्राओं पर लक्ष्मी चित्रित हैं। स्कन्धगुप्त के समय के दो चित्र प्राप्त हुए हैं, जिन पर लक्ष्मी का चित्रण हुआ है। एक सिक्के पर धनुष-बाण लिये राजा तथा दूसरी तरफ कमल पर लक्ष्मी की मूर्ति है। इस पर 'श्री स्कन्धगुप्तः' लिखा है। दूसरे सिक्के पर लक्ष्मी राजा को कुछ दे रही हैं।

महाराष्ट्र और आन्ध्रप्रदेश के सातवाहन वंश के ब्राह्मण राजाओं, दक्षिण भारत के चालुक्य नरेश विनयादित्य तथा हूण शासक तोरमाण, यशोवर्मन और क्षेमेन्द्र गुप्त के सिक्कों पर भी कई रूपों में लक्ष्मी का अंकन हुआ है। राजपूत काल में मध्य भारत के प्रभावशाली चेदिवंश के शासक गांगेयदेव ने रजत मुद्रा पर सुखासन में बैठी चार हाथ वाली लक्ष्मी की प्रतिष्ठा कराई थी। बुन्देलखण्ड के चन्देल शासक कीर्तिवर्धन के चाँदी के सिक्के तथा उत्पलवंश के कश्मीर के शासक क्षेत्रगुप्त के ताँबे के सिक्कों पर लक्ष्मी के अति कलात्मक अंक हैं।

मुस्लिम साम्राज्य की स्थापना के पश्चात सिक्कों पर लक्ष्मी के अंकन की परम्परा को गहरा आघात लगा। लम्बे अर्से बाद अब दीवाली के अवसर पर विक्री के लिए सरकारी टकसाल में सोने-चाँदी के लक्ष्मी-गणेश के चित्र वाले सिक्के ढाले जाने लगे हैं। यह सिक्के विभिन्न तौल के होते हैं। यह खरीददारी की वैध मुद्रा नहीं है, पूजा और उपहार में देने के लिए लोग इन्हें खरीदते हैं।

□ पो.आ.-जासापारा, गोसाईगंज-228119
जनपद-सुलतानपुर (उ.प्र.)
मो.नं.-9450143544, 7379100261

डिजिटल त्यौहार

□ रवि प्रकाश केशरी

दीवाली आने वाली थी। हरिनाथ जी अपने घर के कोने-कोने को कंदीलों से सजाने और धूम-धाम से दीवाली मनाने की योजना बना रहे थे। पिछले सात वर्षों से उनका बेटा कुशल अपने बीबी-बच्चों के साथ नौकरी के लिए अमेरिका चला गया था। उसकी बाट जोहते ही हरिनाथ जी की आँखों का दीया जलता-बुझता रहता था।

मगर इस बार कुशल ने वादा किया था कि वह जरूर घर आएगा। तभी से हरिनाथ जी ने उसके स्वागत और पोते के साथ ढेरों समय बिताने की योजना बना ली थी।

दीवाली को बस एक दिन ही रह गया था कि कुशल का फोन आया। उसने बताया– "पिताजी, कम्पनी के डायरेक्टर ने सभी कर्मचारियों की छुट्टी रद्द कर दी है। कम्पनी की सालाना मीटिंग जो अगले सप्ताह होने वाली थी, वह दीवाली वाले दिन ही होगी। सो मैं नहीं आ सकूँगा।" हरिनाथ जी के मन की खुशियों का दिया जलने से पहले ही बुझ गया। वे उदास से बैठे रह गए।

दीवाली की शाम भी आ गई। चारों और दीये की रोशनी और पटाखों का शोर फैल गया। हरिनाथ जी ने भी घर को बेमन से रोशन किया और घर के आँगन में कुर्सी डालकर बैठ गए। तभी अचानक दरवाजे की घंटी बजी। हरिनाथ जी ने दरवाजा खोला। सामने कूरियर वाला था। उसने एक पैकेट दिया।

हरिनाथ जी ने उसे खोला। उसमें एक स्मार्ट फोन था। जैसे ही फोन स्टार्ट किया, तुरन्त घण्टी बजने लगी। उधर से आवाज कुशल की थी। वह बोला– "पिताजी, मैं आपको वीडियो कॉल कर रहा हूँ, बस आप हरे वाले बिन्दु को ऊपर की ओर कर दीजिए।"

अगले ही पल कुशल, उसकी बीबी और हरिनाथ जी का पोता फोन पर दिखाई देने लग गए। हरिनाथ जी ने काफी लम्बी बात की। वे खुशी से फूले नहीं समा रहे थे। अपने पोते को सारा घर वीडियो कॉल पर दिखाया। अन्त में हरिनाथ जी ने ढेरों आशीर्वाद के साथ फोन कट किया।

आज हरिनाथ जी ने भी समय के साथ डिजिटल त्यौहार मनाकर अपने मन को सन्तुष्ट कर लिया था।

□ सी.के.-64/70 एत्र, हीरापुरा, कबीरचौरा, वाराणसी-221001
मो.नं.-9889685168

राष्ट्रभक्त वीरांगना झलकारी बाई

□ मनोहर पुरी

भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में जिन वीरांगनाओं ने अपने तन-मन-धन को राष्ट्र पर न्यौछावर करने में तनिक भी झिझक नहीं दिखाई, उनमें झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई की सबसे विश्वस्त सेनानी का नाम था झलकारी बाई। उस युग में एक दलित परिवार की महिला ने वह करिश्मा कर दिखाया, जिसे देख कर स्वयं शत्रु भी दंग रह गए।

सन् 1857 ई0 के आस पास का यह समय था। भारत आजादी प्राप्त करने के लिए अंग्रेजों को बाहर खदेड़ने का प्रयास कर रहा था। अनेक राजा, महाराजा, जागीरदार और सेठ अंग्रेजों की चाटुकारिता करते हुए देशभक्तों की पीठ में छुरा घोंप रहे थे। दूसरी ओर तमाम देश-भक्त देश को अंग्रेजों के चंगुल से मुक्त कराने के लिए प्राणों की बाजी लगा रहे थे। इस लड़ाई में जिस साहस के साथ झलकारी बाई के नेतृत्त्व में दलित महिलाओं ने भाग लिया वह इतिहास में विशेष स्थान रखता है। उसने जाति, धर्म की परवाह न करते हुए वीरतापूर्वक देश-धर्म को अपनाया। जिस समय सारा समाज ऊँच नीच, छुआछूत, जात-पाँत के झगड़ों में उलझा था, झलकारी बाई ने राष्ट्र धर्म को सर्वोपरि मानते हुए इतिहास में अपना नाम दर्ज कराया।

ग्वालियर-झाँसी राज मार्ग के किनारे पर एक छोटा सा गाँव था भोजला। भोजला गाँव में केवल एक ही कोरी परिवार था। परिवार के मुखिया का नाम सदोवा मूलचंद था। सदोवा दिन भर कपड़ा बुन कर अपने परिवार की दाल-रोटी का प्रबंध कर पाते थे। सदोवा की पत्नी का नाम लहकारी

था। झलकारी सदोवा और लहकारी की एक मात्र संतान थी, जिसका जन्म 22 नवम्बर, 1830 को हुआ था।

गाँव में झलकारी प्रायः चन्ना-रमची के साथ ही खेलते कूदते दिन व्यतीत करती थी। चन्ना जाति का जाटव था। रमची-रामचरण बाल्मीकि था। दोनों के माथे पर उनकी जाति बचपन में ही लिख दी गई थी। दोनों को गाँव के लोग बात-बात पर जलील करते थे। इसलिए उन्हें भी अधिक से अधिक समय झलकारी के साथ रहना अच्छा लगता था। दोनों झलकारी को अपनी बहन मानते थे। तीनों हम उम्र थे। उनकी आयु 8-10 साल के आस-पास थी। वे एक साथ जंगल जाते। वहाँ के जंगली फल खाते और जलावन इकट्ठा करते। घर के आस-पास होते तो झलकारी मिट्टी के घरौंदों की बजाय छोटे-छोटे किलों का निर्माण करती। खाली बैठती तो हवा में किले बनाती रहती। कभी कभार किसी बात पर तकरार होती तो झलकारी उन दोनों पर भारी पड़ती थी। बात करने में भी और चुस्ती-फुर्ती में भी।

एक दिन तीनों जंगल में लकड़ी काटने के लिए गए। तीनों के हाथों में छोटी छोटी धारदार कुल्हाड़ियाँ थीं। जंगल में चारों ओर जलावन बिखरा पड़ा था। रात में चली आँधी ने उनका काम आसान कर दिया था। जलावन बीन कर तीनों अपने अपने गट्ठर बनाने में लगे थे। अपना गट्ठर बाँध कर झलकारी एक पेड़ के नीचे बैठ कर सुस्ताने लगी। चन्ना-रमची भी अपने काम से निपट कर थोड़ी दूर कुछ फलों की खोज में निकल गए।

झलकारी को बैठे-बैठे झपकी आ गई। तभी उसे अपने सामने गुर्राहट की आवाज सुनाई दी। उन दिनों जंगल में शेरों का होना बहुत आम बात थी। झलकारी ने आँख खोली तो सामने खड़ा शेर उसके ऊपर छलाँग लगाने की तैयारी कर रहा था। झलकारी को स्थिति समझने में देर नहीं लगी। वह जान गई कि इस हालत में भाग कर बच निकलना संभव नहीं था। उसने शेर का सामना करने की ठान ली। अपने दोनों हाथों में कुल्हाड़ी को थाम लिया। इस बीच शेर ने छलाँग लगाई। झलकारी ने दोनों हाथों से कुल्हाड़ी को सिर से ऊपर उठा कर शेर पर भरपूर वार किया। झलकारी के तेज वार और शेर की छलाँग की तीव्र गति ने चमत्कार कर दिया। बिजली की सी तेजी से कुल्हाड़ी शेर के हलक में जा फँसी। इस अचानक हुए वार से शेर घबरा गया। कुल्हाड़ी से उसके गले की निचली नसें कट गईं। घबरा कर वह तेजी से पीछे हटा। पीछे हटते ही उसने सिर नीचा करके आगे छलाँग लगाई। पीछे हटने से कुल्हाड़ी उसके गले से निकल चुकी थी। इस बार झलकारी ने भरपूर वार शेर के माथे पर

किया। उसका माथा बीचों बीच से फट गया और वह वहीं ढेर हो गया।

शेर की दहाड़ सुन कर चन्ना और रमची दौड़े-दौड़े वहाँ पहुँचे। सामने का दृश्य देख उनके होश उड़ गए। उन्होंने देखा झलकारी को कुछ नहीं हुआ। शेर अपनी अन्तिम साँसें ले रहा है। दोनों खुशी से नाचने लगे। बिना कोई बात किए लकड़ी उठा कर यह समाचार हलकारी को सुनाने के लिए घर की ओर दौड़ पड़े। वह जैसे हवा में उड़ कर झलकारी के घर जा पहुँचे। बड़ी हड़बड़ी में उन्होंने यह समाचार सदोवा और हलकारी को सुनाया। बच्चों की बात सुन कर दोनों पति पत्नी घबरा गए। झलकारी ने कुल्हाड़ी से शेर को मार दिया है इसकी कल्पना करना भी कठिन था। किसी अनिष्ट की आशंका से दोनों के हृदय काँप उठे। तभी सिर पर लकड़ियों का गट्ठर उठाए झलकारी ने घर में प्रवेश किया। झलकारी को ठीक ठाक अपने सामने देख दोनों की जान में जान आई।

पल भर में जंगल की आग की तरह यह खबर पूरे गाँव में फैल गई। एक नौ-दस साल की दलित बच्ची ने अकेले ही कुल्हाड़ी से शेर को मार डाला। किसी को विश्वास ही नहीं हो रहा था। झलकारी की न तो ऐसी उमर थी और न ही इतना बलिष्ठ शरीर था कि वह ऐसा कोई कारनामा कर पाती। पर सच तो सच ही था। समाज के उच्च वर्ग के लिए इस बात को पचाना कठिन हो गया था। गाँव में हर व्यक्ति झलकारी द्वारा शेर को मारने की बात कर रहा था। कुछ दूर से और कुछ पास से लोग उसे देखने के लिए आने लगे।

झलकारी सुन्दर, सुशील और साहसी लड़की थी। उस समय के रिवाज के अनुसार उसके विवाह की आयु निकलने लगी थी। कोरी समाज के बुजुर्गों को उसके विवाह की चिन्ता हो रही थी। इस बीच यह समाचार झाँसी भी पहुँच गया था। वहाँ कोरियों की अलग बस्ती थी। एक कोरी बुजुर्ग धन्ना ने उसके विवाह की बात झाँसी में की। पूरन नामक लड़का 12 बरस का था। गठीले बदन वाला यह लड़का उन्हें झलकारी के लिए उचित वर लगा। बात को सिरे चढ़ाने के लिए धन्ना सदोवा के घर पहुँच कर उसका विवाह पक्का कर गए।

विवाह की बात पक्की हुई तो चन्ना-रमची ने चुहल की। कहने लगे– "झलकारी, यहाँ पर तो तुम शेर को मारती थी। अब झाँसी में किसे मारोगी ?"

झलकारी ने उत्तर दिया– "मैं झाँसी में शेरों का शिकार करूँगी।"

गोरों के अत्याचार चारों ओर चर्चा का विषय थे। सवर्ण वर्ग के लोग तो किसी प्रकार के जोड़-तोड़, चापलूसी और धन दौलत दे कर अपने आपको बचा लेते थे। दलितों के लिए यह भी संभव नहीं था।

उनके पास न तो देने को कुछ था और न ही उन्हें किसी प्रकार की चालाकी आती थी। वे गोरों के अत्याचारों की चक्की में पिसते हुए उनके लिए बेगार करने को मजबूर थे। बात जन साधारण तक ही सीमित नहीं रही थी। सिन्धिया जैसे शक्तिशाली राज परिवार अंग्रेजों के सामने झुक गए थे। झाँसी राज्य की हालत भी ठीक नहीं थी। उसके आस-पास के राजा झाँसी पर आँख गड़ाए थे। वे अंग्रेजों से किसी भी शर्त पर हाथ मिलाने को तैयार थे।

पूरन दुलैया के साथ विवाह करके झलकारी बाई झाँसी के नए पुरा मोहल्ले में आ गई। झलकारी घर का काम-काज करने में निपुण थी। वह कपड़ा बुनने में भी पूरन का हाथ बँटाती। हाट के दिन पूरन बुना हुआ कपड़ा बेच आता। ईमानदारी और लगन से काम करना उसे भाता था। सैनिक बन कर देश सेवा करने की उसकी तीव्र इच्छा थी। उसकी वीरता के किस्से सबने सुन रखे थे। इसलिए सब उसका आदर करते थे। झलकारी को इस बात का जरा सा भी घमंड नहीं था। वह एक साधारण गृहणी की भाँति दिन भर घर परिवार में व्यस्त रहती थी। कई बार उसके मन में महल में जाकर रानी को देखने का मन करता था। आस-पड़ोस की महिलाएँ उसे निरन्तर यह बताती रहती थीं कि उसकी शक्ल-सूरत महारानी से मिलती है।

देश का राजनीतिक वातावरण निरन्तर बिगड़ता जा रहा था। झाँसी पर भी उस विषैले वातावरण का प्रभाव होता दिखाई देने लगा था। महाराज गंगाधर राव के हाथ से राज्य की सत्ता फिसलने लगी थी। वह स्वयं रंग-रेलियाँ मनाने में व्यस्त थे। चारों ओर षडयंत्रों की आग धधक रही थी। राज्य में परस्पर जातियों के झगड़े सिर उठा रहे थे। अंग्रेज दिन-प्रतिदिन प्रबल होते जा रहे थे। अंग्रेज अधिकारी गोर्डन मनमानी करने लगा था। गंगाधर राव की रानी लक्ष्मीबाई इस आने वाले संकट को भली भाँति पहचान रही थी। परन्तु वह भी थी तो महिला ही। पति के होते हुए उस समय औरत को कुछ कहने और करने का अधिकार ही कहाँ था। फिर भी रानी पूरी झाँसी की खबर रखती थी। रानी को झलकारी के विषय में पूरी जानकारी थी। वह भी उससे मिलना चाहती थी।

हल्दी कुमकुम के त्योहार पर रानी ने झलकारी को महल में आने का निमंत्रण भेजा। उत्सव में नगर के बड़े-बड़े घरानों की महिलाओं के साथ-साथ जन-साधारण और दलित वर्ग की महिलाएँ भी बड़ी संख्या में सम्मिलित थीं। रानी हर एक से प्रेमपूर्वक मिल रही थी। कुछ देर बाद रानी और झलकारी आमने-सामने हुईं। दोनों ठगी सी एक-दूसरे को देखती रह गईं। बहुत भा गई थी झलकारी रानी को। जब झलकारी ने

बताया कि उसे कुश्ती, घुड़सवारी और अस्त्र-शस्त्र चलाना अच्छा लगता है तो रानी ने उसमें अधिक रुचि लेनी शुरू कर दी। उसे शस्त्र चलाने का अभ्यास करने के लिए प्रेरित किया।

वास्तव में जो इतिहास भारत के पहले स्वतंत्रता संग्राम का कारण बनने जा रहा था, उसके निर्माण में झलकारी का योगदान तो होने ही वाला था। इसीलिए रानी लक्ष्मीबाई और झलकारी बाई की भेंट हुई थी। 21 नवम्बर, 1853 को राजा गंगाधर राव का निधन हो गया। इस समय लक्ष्मीबाई की आयु मात्र अठारह वर्ष की ही थी। दुःख के इस समय में झलकारी और रानी की घनिष्ठता बढ़ी। झलकारी रानी के साथ युद्धाभ्यास के समय अक्सर दिखाई देने लगी। इन दिनों रानी अपने दत्तक पुत्र दामोदर राव को झाँसी का उत्तराधिकारी घोषित करवाने के लिए अंग्रेजों के साथ पत्र-व्यवहार में व्यस्त रहती थी। अन्ततः लार्ड डलहौजी ने दामोदर राव को झाँसी का राजा मानने से इंकार कर दिया। इतना ही नहीं, उसने झाँसी पर अपने अधिकार की घोषणा कर दी। रानी से महल खाली करवा लिया गया। खजाने पर अंग्रेजों का कब्जा हो गया। सबसे आश्चर्य की बात यह है कि जब झाँसी पर अंग्रेजों ने कब्जा किया, तब झाँसी में अंग्रेजों की संख्या मात्र अस्सी थी। उन्हें बहुत आसानी से मार कर भगाया जा सकता था। ऐसा क्यों नहीं हुआ, यह प्रश्न आज भी अनुत्तरित है।

रानी अब नाम मात्र की रानी रह गई थी। इस समय सवर्ण वर्ग के अधिकांश लोग उनसे कन्नी काटने लगे थे। इसके विपरीत जन साधारण और दलितों में रानी के साथ कंधे से कंधा मिला कर लड़ाई लड़ने का जज्बा जोर पकड़ता जा रहा था। धन का अभाव होते हुए भी रानी लक्ष्मीबाई ने सेना का गठन करना प्रारम्भ किया। झलकारी का पति पूरन और उसके बालसखा चन्ना और रामची भी सेना में भर्ती हो गए। इस अवसर पर समाज के लोगों ने उसका तरह-तरह से उपहास किया था। पूरन और झलकारी ने उन बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया। रानी के आदेश पर उन्होंने जो जिम्मेदारी उठाई थी, वह प्राण देकर भी पूरी करने के लिए दोनों तत्पर थे।

आस-पास के गाँवों से भी लोग रानी की सेना में भर्ती होने के लिए आने लगे थे। दलित और पिछड़े वर्ग के लोगों में सेना में भर्ती होने के लिए होड़ लगी थी। महिलाओं की भर्ती का दायित्त्व झलकारी बाई पर था। पूर्व सैनिकों को वापिस बुला कर सेना का पुनर्गठन किया जाने लगा था।

रानी ने यह मान लिया था कि अब लड़ाई तो होनी ही है। अचानक रणभेरी बज उठी। 10 मई 1857 को मेरठ छावनी के भारतीय सैनिकों ने विद्रोह कर दिया।

झाँसी में भी विरोध की ज्वाला फूटी। पूरन कोरी और झलकारी ने अपने-अपने मोर्चे सँभाल लिए। जल्दी ही झाँसी स्वतंत्र हो गई। राज्य की बागडोर रानी लक्ष्मी बाई के हाथों में आ गई। किले, शस्त्रागार और खजाने पर उनका कब्जा हो गया। कैप्टन स्कीन और मेजर गोर्डन मार डाले गए। कुछ अंग्रेज अधिकारी भागने में सफल हो गए। बाद में उन्होंने पलट कर वार किया। अंग्रेज भारी पड़ने लगे। रानी चिन्तित हो उठी, पर झलकारी तनिक भी विचलित नहीं हुई। वह धीरता और वीरता का संगम थी। वह केवल इतना चाहती थी कि रानी पर कोई आँच न आए और वे दामोदर राव के साथ सुरक्षित निकल जाएँ।

झाँसी का किला शत्रु सेना द्वारा घेर लिया गया। स्थिति की विकटता को देखते हुए झलकारी ने रानी को किले से निकल जाने के लिए तैयार कर लिया। वह स्वयं रानी का बाना पहन कर सैनिकों का नेतृत्त्व करने लगी। इसी दौरान उसके पति पूरन कोरी वीर गति को प्राप्त हुए। इस पर भी झलकारी ने हिम्मत नहीं हारी। झलकारी की वेशभूषा और लड़ने के तरीके को देख कर अंग्रेज धोखा खा गए। जब तक उन्हें यह ज्ञात हुआ कि उनसे युद्ध लड़ने वाली स्त्री रानी न होकर झलकारी बाई है, तब तक बहुत देर हो चुकी थी। रानी बहुत दूर निकल गई थी। अंग्रेजों ने एक जोरदार हमला करके झलकारी को आत्मसमर्पण करने के लिए बाध्य कर दिया। झलकारी को पकड़ कर जनरल ह्यूरोज के सामने प्रस्तुत किया गया। झलकारी की वीरता और देश प्रेम से जनरल ह्यूरोज इतना अभिभूत हुआ कि उसे 'गदर' में भाग लेने के अपराध में दंड देने की बात भूल गया। वह उसकी निडरता और साहस की भूरि-भूरि प्रशंसा करने लगा। कहा जाता है कि उसने झलकारी को छोड़ देने का आदेश दिया।

अंग्रेजों के चंगुल से मुक्त होकर झलकारी जंगलों में चली गई। रानी लक्ष्मीबाई भी वीर गति को प्राप्त हो चुकी थी। झाँसी की सेना तितर-बितर हो गई थी। झलकारी ने अपने देश को आजाद कराने के लिए नए सिरे से सेना को गठित करने की योजना बनाई। वह इधर-उधर भटक रहे सैनिकों को एकत्र करने के काम में जुट गई।

झलकारी के बेजोड़ साहस, देश-प्रेम और स्वामिभक्ति को नमन करने के लिए भारत सरकार ने 22 जुलाई, 2001 को उनकी याद में एक डाक टिकट जारी किया। देश में कई स्थानों पर लगे उनके बुत आज भी आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित कर रहे हैं।

□ 82, साक्षर अपार्टमेन्ट्स, ए--3, पश्चिम विहार,
नई दिल्ली-110063
मो.नं.-9810395223

मंगलकारी मिट्टी के दीप

□ रामगोपाल राही

अंधकार को दूर करने वाला दीपक सकारात्मक ऊर्जा व प्रसन्नता देता है। प्रकाश वैसे ही शुभ होता है। माना जाता है वैदिक युग से दीप जलाने की रीति चली आयी है।

मिट्टी के दीपक पंच तत्त्व के प्रतीक होते हैं। दीपक का जन्म मिट्टी से ही हुआ है। मिट्टी को जल से गीला किया जाता है। गीली मिट्टी से कुम्हार चाक पर दीपक बनाता है। गीले दीपकों को आकाश तले धूप और हवा में सुखाया जाता है। यहाँ भी पंच तत्त्वों का मेल है। सूखे हुए कच्चे दीपकों को कुम्हार आँवे की आग में तपाता है, आग भी पंचतत्त्व में से है। सूखने के बाद दीपक ताम्रवर्णी हो उपयोगी हो जाता है। क्षिति, जल, पावक गगन, समीरा। अर्थात् मिट्टी, पानी, आग, आकाश तथा वायु। दीपक तैयार करने में इन पाँचों तत्त्वों का योगदान है। इसीलिए कहा जाता है मिट्टी के दीपक पंच तत्त्व के प्रतीक होते हैं।

ये मिट्टी के दीप घी से जलाने पर काफी गुणकारी वह उपयोगी होते हैं। शुद्ध घी के अन्दर गुणकारी खुशबू होती है, जो दीपक जल जाने के काफी देर तक बनी रहती है। इससे आस-पास का पर्यावरण शुद्ध बना रहता है।

अध्यात्म के अनुसार हमारे शरीर में सात ऊर्जा चक्र होते हैं। घी का दीपक जलाने से सातों चक्र जागृत हो जाते हैं, जिनसे शरीर में ऊर्जा का संचार होता है। चेहरों पर चमक, हृदय में प्रसन्नता अनुभूति, मन अभिभूत होता लगता है।

दीपक तेल से भी जलाए जाते हैं, पर घी के दीपक की बात अलग ही होती है। जलते हुए घी के दीपक में लौंग डाल दी जाए, तो उससे निकलने वाला धुआँ चर्म रोगों से मुक्ति दिलाने में मदद करता है।

दीपक प्रारंम्भिक काल से ही आस्था का प्रतिरूप है। ईश्वर प्रतिमा के सम्मुख दीपक जलाने से मन एकाग्र होता है। प्रतिमा के सामने जलाया दीपक आस-पास का अँधेरा तो हटाता ही है, साथ ही मन का अंधकार भी दूर करता है।

ग्रंथों के अनुसार सही ढंग से श्रद्धापूर्वक जलाया गया दीपक कभी निष्फल नहीं होता। ज्योतिष के अनुसार दीपक सकारात्मक माना जाता है। पूजा का दीपक लम्बे समय तक जलते रहना शुभ होता है। मिट्टी के दीप शुभ एवं मंगलकारी होते ही होते हैं। जब लक्ष्मी का आविर्भाव हुआ, तो उनके स्वागत और पूजा में मिट्टी के शुभ मंगलकारी दीप ही जले थे।

दीपावली हमारा सर्वोपरि प्राचीन त्योहार है। इस अवसर पर अगणित, असंख्य, अपरमित दीप जलाए जाते हैं। प्राचीन समय में दीपकों से हर घर रोशन होता था। छतों पर, मुंडेरों पर दीपक ही दीपक जले होते थे। माना जाता है दीपावली के असंख्य जले दीपकों से छोटे-जीवाणु व कई तरह के कीट मर जाते हैं।

वस्तुतः उपयोगी गुणकारी मिट्टी के दीपों की महिमा अलग ही होती है। वैसे अब काफी समय से धातुओं के दीपक भी प्रचलन में हैं, पर मिट्टी के दीपों का महत्त्व अपने आप समझ में आ जाता है।

□ वार्ड-6, पोस्ट-लाखेरी, बूँदी-323615 (राज.)
मो.नं.-8949682800

अंधकार से लड़ते दीपक

□ राम नरेश उज्ज्वल

झिलमिल झिलमिल करते दीपक।
हर घर में हैं जलते दीपक।।

आशा की लौ लिए हमेशा,
तम को जग से हरते दीपक।

नफरत की काली स्याही को,
सदा नेह से धुलते दीपक।

नहीं मुसीबत में घबराना,
हरदम सबसे कहते दीपक।

जीवन में संघर्ष बहुत है,
अंधकार से लड़ते दीपक।

काल कोठरी के भीतर भी,
उज्ज्वल किरणें भरते दीपक।

छल लेते हैं लोग उन्हें पर,
नहीं किसी को छलते दीपक।

□ उज्ज्वल सदन, मुंशी खेड़ा, ट्रान्सपोर्ट नगर, एयरपोर्ट, लखनऊ-226009
मो.नं.-7071793707

धनतेरस का पर्व

□ डॉ० विभा खरे

दीपावली भारतीय संस्कृति के प्रमुख पर्वों में से एक है। इसे मनाए जाने की परम्परा प्राचीन काल से है। इस पर्व का प्रारम्भ कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी से हो जाता है, जिसे धनतेरस के नाम से मनाया जाता है ।

लक्ष्मी पूजन :

व्यवसायी व्यक्ति इस दिन को बहुत महत्त्व देते हैं। वे वर्ष भर का वास्तविक लेखा-जोखा करते हैं। व्यापारिक स्थलों को सजाकर लक्ष्मी पूजन किया जाता है। इस पर्व पर नए बर्तन खरीदना शुभ समझा जाता है। प्रत्येक परिवार अपनी सामर्थ्य के अनुसार बर्तन खरीदता है।

चिकित्सक समुदाय के लिए धनतेरस :

ऐसी मान्यता है कि इस दिन भगवान धनवन्तरि अपने हाथ में अमृत कलश लेकर प्रकट हुए थे। इसी कारण चिकित्सक समुदाय के लिए यह दिवस बहुत महत्वपूर्ण है। चूँकि स्वास्थ्य का सीधा सम्बन्ध स्वच्छता से है। अतः इस दिन इस ओर भी विशेष ध्यान दिया जाता है। आगे चलकर अमृत-कलश नए बर्तनों तक सीमित रह गया, जिन्हें लक्ष्मी पूजन के समय पूजा स्थल पर सजाकर रखा जाता है।

यम देवता को प्रसन्न करने का पर्व :

चूँकि यह दीपावली पर्व समूह का प्रथम पर्व है। अतः इसी दिन से दीप प्रज्ज्वलित करना आरम्भ हो जाता है। एक विशेष दीपक भी जलाया जाता है, जिसे यमदीप कहा जाता है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि इस दीप को जलाने से यम देवता प्रसन्न हो जाते हैं और अच्छे स्वास्थ्य व दीर्घायु का आशीर्वाद देते हैं।

धनतेरस पर्व से जुड़ी कुछ कथाएँ :

अन्य पर्वों की तरह इस पर्व से भी कुछ कथाएँ जुड़ी हैं, जिसमें निम्नलिखित कथा उल्लेखनीय है– मृत्यु के देवता यमराज एक दिन विचारमग्न थे। उनके मस्तिष्क में तरह-तरह के विचार कौंध रहे थे। सहसा उन्होंने सोचा कि प्राणियों की आयु पूरी होने पर मेरे दूत मेरा आदेश मिलते ही उस प्राणी का प्राण हरण कर लेते हैं। क्या उन्हें किसी के प्राण लेने में कभी दया नहीं आती ? ऐसा विचार कर उन्होंने अपने वरिष्ठतम दूत को बुलाकर ऐसा प्रश्न किया। उत्तर में दूत ने एक कथा सुनायी–

पौराणिक काल में हंसराज नाम का एक पराक्रमी राजा था। वह एक बार शिकार खेलते-खेलते जंगल में भटक गया और मार्ग ढूँढ़ते-ढूँढ़ते एक अन्य राज्य में प्रवेश कर गया। राजा के सैनिकों द्वारा दरबार में प्रस्तुत किए जाने पर राजा हंस ने अपना परिचय दिया तो उसका आदर-सत्कार किया गया। उसी दिन राजा हेम को काफी लम्बी प्रतीक्षा के बाद पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई थी। अतः महल व राज्य में विशेष समारोहों का आयोजन था। राजा हंस को विशेष अतिथि के रूप में आदर प्रदान किया गया। चारों ओर हर्ष और उल्लास का वातावरण था, किंतु अचानक रंग में भंग हो गया। क्योंकि राजा को ज्योतिषियों ने बताया कि राजकुमार की आयु बहुत कम है। विवाह के चार दिन बाद ही उसका जीवन समाप्त हो जाएगा।

यह भविष्यवाणी सुन राजा हेम चिंतामग्न हो गया। उसने राजा हंस से विचार-विमर्श किया और निश्चय किया कि राजकुमार की बाल्यावस्था पूरी होते ही राज्य से दूर जंगल में रखा जाएगा और उसका विवाह भी नहीं किया जाएगा। चूँकि जंगल में उसे कन्या के दर्शन न होंगे। अतः वह किसी की ओर आकृष्ट भी न हो सकेगा।

राजकुमार का बाल्यकाल पूरा होते ही इस निश्चय पर अमल किया गया। उसे जंगल में एक महात्मा की कुटी में रखा गया, जहाँ वह आयु व्यतीत करने लगा। कुछ वर्ष बीत जाने पर एक दिन राजा हंस की रूपवती कन्या घूमते-घूमते उसी कुटी की ओर पहुँच गई और राजकुमार को देखते ही मोहित हो गई। राजकुमार भी राजकुमारी की ओर आकृष्ट हुआ। फिर वे एक-दूसरे से मिलने लगे।

दोनों के प्रेम में जैसे ही मजबूती मिली, उन्होंने आपस में एक दिन गंधर्व विवाह कर लिया। ठीक चार दिन बाद राजकुमार की आयु पूरी हुई। समय पर आदेश पाकर वही दूत प्राण लेने जा पहुँचा, उस समय दोनों पति-पत्नी प्रेम में खोये थे। राजकुमार के प्राण निकलते ही राजकुमारी का बुरा हाल हो गया। वह भीषण विलाप करने लगी, जिसे देख दूत को कुछ दया

आई। किन्तु कर्तव्य का ध्यान आते ही, वह यमनगरी की ओर बढ़ गया।

यह मर्मस्पर्शी कथा सुनाकर दूत विनम्र स्वर में बोला– "क्या ऐसी कोई युक्ति नहीं है स्वामी, कि इस तरह की अकाल मृत्यु से बचा जा सके।"

दूत की बात सुनकर यमराज कुछ सोचकर बोले– "जो भी व्यक्ति कार्तिक मास में कृष्णपक्ष की त्रयोदशी के दिन सच्चे मन से मेरा पूजन करके दीप जलाएगा, उसके परिवार में कोई भी युवा मृत्यु नहीं होगी।

धनतेरस पर्व से संबंधित प्रचलित लोक-कथा :

पर्व से संबंधित एक लोक-कथा भी काफी प्रचलित है। एक गाँव में एक बहुत ही गरीब स्त्री रहा करती थी। वह मेहनत-मजदूरी करके अपनी गुजर-बसर किया करती थी। एक बार दीपावली पर उसके पास इतने पैसे नहीं थे कि वह नए बर्तन खरीद सके। पूजा के लिए वह कुम्हार से मिट्टी का एक बर्तन खरीद लाई। उसकी इस बात का पड़ोसियों ने खूब मजाक बनाया, किन्तु उस स्त्री ने इन उपहासों की उपेक्षा करके बड़ी श्रद्धा व भावना से लक्ष्मी का पूजन किया और मिट्टी के उस बर्तन में भोग लगाया। देवी लक्ष्मी उसकी पूजा से बहुत प्रसन्न हुई। अन्य घरों के सोने-चाँदी आदि के बर्तनों में परोसे भोग को त्याग कर न सिर्फ उस स्त्री का भोग स्वीकारा, बल्कि उसे साक्षात् दर्शन भी दिए। माँ लक्ष्मी ने यह स्पष्ट कर दिया कि महत्त्व भावना का है, नये बर्तनों का नहीं ? सामर्थ्य से परे कुछ करने की आवश्यकता नहीं, फिर आडम्बर क्यों ?

□ जी-9, सूर्यपुरम, नन्दनपुरा, झाँसी-284003
मो.नं.-9415055655

नवम्बर माह के व्रत-त्यौहार

01	सोम	एकादशी व्रत।
02	मंगल	भौम प्रदोष व्रत, धनतेरस।
03	बुध	नरक चतुर्दशी, मास शिवरात्रि व्रत।
04	गुरु	दीपावली।
05	शुक्र	अन्नकूट, गोवर्धन पूजा।
06	शनि	भैयादूज, चन्द्रदर्शन।
08	सोम	वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत, डाला छठ व्रत प्रारम्भ।
11	गुरु	डाला छठ व्रत पारण।
12	शुक्र	गोपाष्टमी।
13	शनि	अक्षय नवमी।
14	रवि	बाल दिवस।
15	सोम	हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत।
16	मंगल	भौम प्रदोष व्रत।
17	बुध	ग्यारहवीं शरीफ।
19	शुक्र	कार्तिक पूर्णिमा, देव दीपावली, गुरुनानक जयंती।
23	मंगल	संकष्ठी गणेश चतुर्थी व्रत।
30	मंगल	एकादशी व्रत।

लक्ष्मी का वाहन उल्लू

□ शिवचरण चौहान

उल्लू को मारने पर 3 साल से लेकर 7 साल तक की सजा का प्रावधान है। अंध विश्वास के चलते उल्लू की हत्या की जाती है। आधुनिक युग के वैज्ञानिकों के अनुसार उल्लू में कोई ऐसा गुण नहीं पाया जाता, जिससे किसी को कोई दिव्य गुण प्राप्त हो सके। उल्लू की आँखें, पंजे, पंख आदि सभी चीजें सामान्य हैं। इनमें कोई विशेष गुण नहीं पाए जाते। उल्लू की आँखों का अंजन कोई दिव्य दृष्टि नहीं प्रदान करता।

दिवाली के आस-पास शिकारी उल्लू को पकड़ कर कस्बे, गाँव और शहरों में जाकर बेच लेते हैं। दीवाली की रात तंत्र विद्या में उल्लू की सभी चीजें प्रयोग की जाती है। इसलिए सरकार हर साल दशहरे से दिवाली और कार्तिक पूर्णिमा तक उल्लू को पकड़ने, पालने, बेचने और मारने पर रोक लगा देती है। हर प्रदेश में सरकार द्वारा रेड अलर्ट घोषित किया जाता है। सभी पुलिस थानों, चौकियों में निगरानी कराई जाती है कि कहीं कोई उल्लू का अवैध व्यापार तो नहीं कर रहा। वन्यजीव संरक्षण अधिनियम के तहत उल्लू पकड़ना, मारना, पालना कानूनन अपराध है। आप इस पंछी से डरें नहीं। यह एक पंछी है। यह आपका कोई नुकसान नहीं करता। किसानों का सहायक पंछी है। खेत की छिपकली, चूहे, कीड़े, मकोड़े यह बीन-बीन कर खा जाता है। इसके बारे में जो कथाएँ प्रचलित हैं, वह सब अंधविश्वास भर हैं। उल्लू को बचाइए, यह किसान का दोस्त और पर्यावरण का संरक्षक है। यह हमारा शत्रु नहीं, बल्कि मित्र पक्षी है।

उल्लू को लक्ष्मी का वाहन माना गया है। लक्ष्मी, धन की देवी हैं और भगवान

विष्णु की पत्नी। दीपावली को लक्ष्मी की पूजा की जाती है। धन की देवी लक्ष्मी का वाहन उल्लू ! कितना अजीब संयोग है। खूबसूरत लक्ष्मी ने अपना वाहन इतना बदसूरत चुना। इसी तरह गजवदन गणेश का वाहन चूहा। गणेश व लक्ष्मी की पूजा का विधान है दीपावली में, तो दोनों के वाहन कैसे अपूज्य होंगे ।

उल्लू का नाम लेते ही लोग चौंकने लगते हैं कि कहीं कोई उन्हें उल्लू तो नहीं बना रहा। सच, उल्लू अपने मुँह से इतनी आवाजें निकाल लेता है कि सुनने वाला अचम्भे में आ जाता है। हर किसी की आवाज की नकल यह तुरन्त कर लेता है।

उल्लू काले भूरे रंग का एक डरावना पक्षी है। इसकी गोल-मटोल पीली आँखें रात और दिन समान रूप से देख सकती हैं। ध्रुव प्रदेशों व कुछ एक द्वीपों को छोड़कर उल्लू सारे संसार में पाया जाता है। संसार भर में उल्लू की 135 से अधिक प्रजातियाँ हैं। भारत में सामान्यतः उल्लू की पाँच प्रजातियाँ पाई जाती हैं। उल्लू मांसाहारी पक्षी है । यह प्रायः रात के अँधेरे में अपने शिकार की तलाश में निकलते हैं। दिन में किसी वृक्ष के कोटर में किसी खण्डहर में छिपे रहते हैं। कुछ छोटी नस्ल के उल्लू शाम होते ही भोजन की तलाश में निकल पड़ते हैं।

छोटे उल्लुओं में भारत का 'खूसट', इंग्लैण्ड का 'वार्न आऊल' तथा मैक्सिको का बौना उल्लू है। ये झुण्ड के झुण्ड विचित्र आवाजें करते हुए शाम को गाँवों में बाग बगीचों व बस्तियों के किनारे पेड़ों पर देखे जा सकते हैं। देखने में सींगदार उल्लू बहुत डरावना लगता है।

करपेंची उल्लू करीब 18 इंच लंबा होता है। नर और मादा एक समान होते हैं। गर्दन का रंग पीला भूरा होता है। सिर बड़ा, आँखें बाहर निकली हुई और पंजे नुकीले मजबूत होते हैं। चोंच छोटी नुकीली और टेढ़ी होती है। इसका प्रजनन काल नवंबर से मार्च-अप्रैल तक होता है। किसी पेड़ की कोटर या खंडहर में मादा एक या दो अंडे देती है।

मुआ उल्लू तालाबों, नहरों, झीलों, नदियों के किनारे रहता है। मुआ मछली खाता है। यह 22 इंच से 2 फीट तक लंबा होता है। नर मादा समान आकार के होते हैं। आँख की पुतली पीली चमकीली होती है।

मुआ उल्लू भारत, श्रीलंका, चीन, जापान, म्यामार आदि देशों में पाया जाता है।

घुग्घू उल्लू को अमराई बाग का उल्लू कहते हैं। करीब 24 इंच लंबाई वाले इस उल्लू के पंखों का रंग मटमैला भूरा होता है, जिस पर पीले और सफेद धब्बे होते हैं।

आँखें पीली और चमकीली होती हैं। चोंच छोटी, नुकीली और टेढ़ी होती है, ताकि शिकार को आसानी से पकड़ ले। यह उल्लू अपने पंजों में शिकार पकड़कर चोंच से नोच कर खाता है। इसके सिर पर सींग जैसे बने होते हैं। आँख की पुतलियाँ पीली-नारंगी होती हैं। इस उल्लू को घुग्घू कहते हैं। यह टूटे-फूटे मकानों व खंडहरों में रहता है, और रात होते ही बस्तियों में आ जाता है। इसे मर्गैली चिरैया भी कहते हैं। भारत में इसका बोलना अशुभ माना जाता है।

हूहू उल्लू करीब 20 इंच लंबा होता है। इसका गला सफेद और पेट मटमैले रंग का होता है। टाँगें पीले रंग की होती हैं। यह पहाड़ों पर ज्यादा रहता है और शिकार की तलाश में रात भर भटकता रहता है।

घुग्गु उल्लू गहरे कत्थई रंग का बिल्ली जैसे मुख वाला होता है। इसकी बिल्ली जैसी आँखें इसकी पहचान कराती है। यह घने जंगलों में रहना ज्यादा पसंद करता है। इसकी लंबाई 24 इंच होती है। नर-मादा एक जैसे दिखते हैं। मादा तीन से चार अंडे देती है।

रेरुआ उल्लू 14 इंच लंबा होता है। यह रंग रूप में घूग्घू उल्लू से मिलता-जुलता है।

टुंडुल उल्लू करीब 10 इंच लंबा होता है। चेहरा हल्के भूरे रंग का, उस पर हल्की धारियाँ पड़ी होती हैं। यह उल्लू देखने में थोड़ा खूबसूरत लगता है। इसकी कई जातियाँ पूर्वी उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद, काशी, आजमगढ़, मिर्जापुर आदि क्षेत्रों में पाई जाती हैं। नेपाल, गढ़वाल, सिक्किम, बर्मा और बलूचिस्तान तक इसकी प्रजातियाँ मिलती हैं। यह बस्तियों में आ जाता है और खुटखुट की आवाज से लोगों का ध्यान आकर्षित करता है।

चिटला, यानी खूसट उल्लू करीब सात-आठ इंच लंबा होता है। शाम होते ही बस्तियों में इसे शोर मचाते देखा जा सकता है।

करेल उल्लू का चेहरा पान जैसा होता है। करीब 11-12 इंच लंबा यह उल्लू आसानी से पहचाना जा सकता है। यह बंजर, रेगिस्तान, या घने जंगलों में पाया जाता है। यह बड़ा ढीठ होता है।

कुचकुचवा उल्लू करीब 7 इंच लंबा होता है। इसे जंगली खूसट भी कहते है। इसका प्रजनन काल मार्च से जून तक होता है।

□ मनेथू सरवन खेड़ा, कानपुर-209121
मो.नं.-6394247957

तमस हरो-तमस हरो

□ वसीम अहमद नगरामी

तमस हरो-तमस हरो, हो न जाए देरी।
पर्व है दिवाली का, रात घुप अँधेरी।।

आज सारी दुनिया में
तुम उजास कर दो,
अंधकार दूर करो
तुम प्रकाश भर दो।
कुमकुमें भी पंक्तिबद्ध करते रहें फेरी।
तमस हरो-तमस हरो, हो न जाए देरी।।

रधिया रम्भाती है
निकट उसके जाओ,
रोशनी से वंचित है
दीप एक जलाओ।
साँझ ढली, रात हुई, हो गयी अबेरी।
तमस हरो - तमस हरो, हो न जाए देरी।।

सोंच-सोंच खुश हैं सब
पर्व है ये आला,
चारों ओर फैला एक,
रेशमी उजाला।
दीप जला आँगन में, खो गया मुँगेरी।
तमस हरो-तमस हरो, हो न जाए देरी।।

गाँव-गली, घर-आँगन,
सब हुए प्रकाशित,
पोर-पोर महका है,
तन हुए सुवासित।
रतजगा है दीपों का, सज रही मुँडेरी।
तमस हरो-तमस हरो, हो न जाए देरी।।

□ 10/42, नगराम बाजार, लखनऊ-2260303
मो.न.-6394177350

उड़द दाल की बर्फी

□ बबिता बसाक

खाने के बाद हम सभी को कुछ मीठा खाने का मन करता है। कुछ न हो तो गुड़ या चाकलेट खाकर ही मुँह मीठा कर लेते हैं।

मिठाई की दुकानों पर हमें नाना प्रकार मिठाइयाँ देखने व खाने को मिलती हैं, लेकिन घर पर तैयार की गई मिठाई बनाने, खाने और खिलाने का आनंद ही कुछ और है। दीपावली जैसे त्यौहार पर तो मिठाई और जरूरी हो जाती है। तो इस बार क्यों न हम एक खास मिठाई तैयार करें उड़द दाल की। कैसे तैयार करें, आइए इसके बारे में जानते हैं–

आवश्यक सामग्री : उड़द की धुली दाल- 250 ग्राम, महीन चीनी- 500 ग्राम, खोया- 100 ग्राम, खरबूजा बीज- 1 चम्मच, किशमिश- 1 छोटा चम्मच, इलाइची पाउडर- आधा छोटा चम्मच, खसखस- 1 चम्मच, बादाम गिरी- 10-12 पीस, देशी घी- 2 बड़े चम्मच।

बनाने की विधि : दाल को रात में भिगोकर रखें। अगले दिन उसे दरबरा पीस लें। फिर कड़ाही में घी डालकर दाल की पिट्ठी को गुलाबी होने तक भूनकर अलग रख लें।

अब कड़ाही में खोया व चीनी डालकर मध्यम आँच पर भूनें। भुन जाने पर इसमें धुली हुई दाल-पिट्ठी मिला कर धीमी आँच पर धीरे-धीरे पकने दें। पाँच मिनट बाद उनमें सभी मेवे मिलाएँ और गैस बंद कर दें। थाली में हल्का सा घी लगाकर तैयार सामग्री को फैला दें। जब मिश्रण ठंडा हो जाए तो मनचाहे आकार में बर्फी काट लें।

उड़द दाल की बर्फी। तैयार है। यह पौष्टिक भी है और स्वादिष्ट भी। दीपावली में इसका आनन्द लीजिए और आने वाले मेहमानों को भी खिलाइए।

□ 551/क/412, संजय गाँधी मार्ग, आजाद नगर, आलमबाग, लखनऊ-226005
मो.नं.-9451134140

इण्डिया लिटरेसी बोर्ड की गतिविधियाँ

सर्वधर्म प्रार्थना–भवन

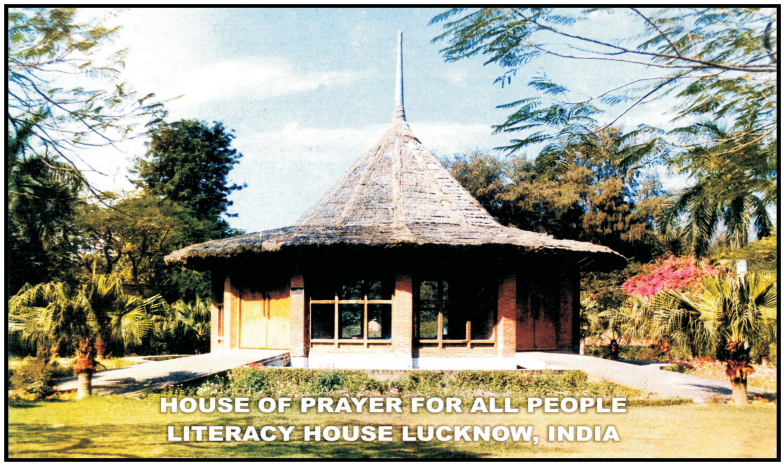

हमारे यहाँ कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से पहले ईश्वर को याद करना और कार्य की सफलता के लिए प्रार्थना करना शुभ माना जाता है। यह परम्परा हमारी संस्कृति में रची-बसी है। साक्षरता निकेतन की संस्थापिका डॉ0 वेल्दी हॉनसिंगर फिशर ने अमेरिकन होते हुए भी यहाँ की परम्परा और संस्कृति को समझा तथा उसे अपनाया। उन्होंने साक्षरता निकेतन परिसर में एक भव्य और दिव्य प्रार्थना-भवन का निर्माण कराया, जिसे सर्वधर्म प्रार्थना-भवन के नाम से जाना जाता है। इस प्रार्थना भवन का उद्घाटन सन् 1959 में तत्कालीन भारत के उपराष्ट्रपति डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन् द्वारा किया गया था।

यह प्रार्थना-भवन यहाँ की पहचान और साक्षरता निकेतन की आत्मा है। प्रार्थना-भवन के चार द्वार हैं, जो पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण चारों दिशाओं में खुलते हैं और चारों दिशाओं से आने वाले सभी मतावलम्बियों का स्वागत करते हैं। प्रार्थना-भवन के अन्दर कोई मूर्तियाँ नहीं हैं। मध्य में केवल एक फौव्वारा है, जिसकी कल-कल ध्वनि मन एकाग्र करने में सहायक है।

साक्षरता निकेतन प्रकाशन द्वारा प्रकाशित प्रार्थना एवं प्रवचन की एक पुस्तक है, जिसकी पर्याप्त प्रतियाँ यहाँ मौजूद रहती हैं। इस पुस्तक में हिन्दू-मुस्लिम-सिक्ख-ईसाई-बौद्ध-पारसी आदि सभी मतों से सम्बन्धित प्रार्थनाएँ संकलित हैं। डॉ0 वेल्दी फिशर ने प्रतिदिन कार्य प्रारम्भ करने से पहले प्रार्थना-भवन में उपस्थित होकर प्रार्थना करने की परम्परा डाली थी, जिसका निर्वाह आज भी किया जाता है।

प्रतिदिन संगीत के साथ सामूहिक प्रार्थना करके यहाँ के कर्मचारी अद्भुत

शांति का अनुभव करते हैं। प्रार्थना के बाद प्रतिदिन कुछ पल प्रेरक प्रसंग और प्रवचन लिए भी समर्पित हैं। इस प्रार्थना-भवन का वास्तु अपने आप में अद्वितीय है। भवन के चारों ओर विशाल लॉन है, जो तरह-तरह के रंग-बिरंगे पुष्पों तथा हरियाली से सुसज्जित है। भवन की छत पक्की न होकर परम्परागत फूस और टीन से सुसज्जित है। जिससे सादगी और ग्रामीण परिवेश का एहसास होता है।

समय-समय पर यहाँ आयोजित होने वाले कार्यक्रमों तथा प्रशिक्षणों के प्रतिभागी भी प्रातःकाल की प्रार्थना में सम्मिलित होकर प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। यह प्रार्थना-भवन मात्र एक प्रार्थना स्थल ही नहीं है, बल्कि साक्षरता निकेतन के पवित्र कार्य-उद्देश्यों का प्रतीक भी है और यहाँ आने वाले हर आगन्तुक के लिए आकर्षण का केन्द्र है।

माता वेल्दी फिशर को इस प्रार्थना-भवन से विशेष लगाव था। जब भी वे यहाँ होती थीं, तो प्रतिदिन प्रार्थना में अवश्य शामिल होती थीं। अपने महाप्रयाण से पहले उन्होंने अन्तिम इच्छा व्यक्त की थी कि मेरे मरने के बाद मेरी अस्थियाँ यहीं प्रार्थना-भवन में रखी जाएँ। 16 दिसम्बर, 1980 को 101 वर्ष की आयु में अमेरिका में ही उनका देहान्त हुआ। उनकी अन्तिम इच्छा का सम्मान करते हुए उनकी अस्थियों को यहाँ लाकर प्रार्थना-भवन में रखा गया। आज भी वे सूक्ष्म रूप में साक्षरता निकेतन परिसर में विद्यमान हैं और यहाँ के कर्मचारियों को अपने कार्य एवं दायित्त्वों के प्रति प्रेरणा देती हैं।

प्रतिवर्ष 18 सितम्बर को धूमधाम से श्रीमती वेल्दी फिशर का जन्म-दिन इसी प्रार्थना-भवन में मनाया जाता है। इस अवसर पर इण्डिया लिटरेसी बोर्ड के सभी कर्मचारियों के साथ-साथ हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख तथा ईसाई धर्म गुरुओं को भी आमंत्रित किया जाता है, जो श्रीमद्भागवत गीता, कुरान, गुरुग्रन्थ साहिब तथा बाइबिल के उपदेश प्रवचन के रूप में सुनाते हैं और यह बताते हैं कि सभी धर्मों का उद्देश्य एक है। ईश्वर एक है, हम सब उसी ईश्वर के बन्दे हैं। हममें कोई भेद नहीं है। हमारी प्रार्थनाएँ और पूजा पद्धतियाँ अलग-अलग हो सकती हैं, परन्तु उद्देश्य एक ही हैं।

इसके अलावा प्रतिवर्ष 02 अक्टूबर गाँधी जयंती के दिन भी इसी प्रार्थना-भवन में विशेष प्रार्थना-सभा का आयोजन होता है। इस दिन यहाँ सामूहिक रूप से गाँधी जी के प्रिय भजन 'रघुपति राघव राजा राम' तथा 'वैष्णव जन तो तेने कहिए' का संगीतमय गायन होता है। श्रीमती वेल्दी फिशर ने राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की प्रेरणा से ही ग्रामीण जनों के कल्याण एवं उद्धार के उद्देश्य से साक्षरता निकेतन की स्थापना की थी। □

दो दिए

□ डॉ० करुणा पाण्डेय

सगीर और राघव पड़ोसी थे। दोनों जी तोड़ मेहनत करके अपने परिवार को पाल रहे थे। राघव एक सेठ की दुकान पर काम करता था, और सगीर रिक्शा चलाकर परिवार पालता था।

दोनों के बच्चों सलमान और राहुल में बहुत दोस्ती थी। दोनों एक ही स्कूल में पढ़ते थे, साथ-साथ साइकिल से स्कूल जाते, शाम को एक साथ खेलते, और पढ़ाई भी एक साथ करते थे। दोनों परिवारों में अच्छा मेलजोल था। ईद के दिन राघव सपरिवार सगीर के घर खाना खाता और होली दीवाली में सगीर सपरिवार राघव के घर खाना खाता। गंगा-यमुना की तरह ये दोनों परिवार मिलकर रहते थे। सारे मोहल्ले में इनके प्यार और दोस्ती की चर्चा होती थी।

इस बार ईद में सगीर चाचा ने राहुल को सौ रुपए दिए तो राहुल ने अपने पापा से कहा– "पापा दीवाली आ रही है, मेरे पास सगीर चाचा के दिए सौ रुपए को मिलाकर बारह सौ रुपए हो जाएँगे। कुछ रुपए मैं और जमा कर लूँगा। इस बार हम दीवाली खूब धूमधाम से मनाएँगे। खूब पटाखे चलाएँगे, खूब दिए जलाएँगे, कंजूसी नहीं करेंगे, हैं पापा !"

"जैसा तुम कहोगे बेटा, हम वैसा करेंगे।" पापा ने राहुल से कहा।

अब राहुल दीवाली का इंतजार करने लगा। हर महीने पैसे इकट्ठा करता था। दशहरे पर उसने झूला चलाने का काम किया और पाँच दिन में एक हजार रुपए इकट्ठे कर लिए। अब वह दीवाली के सपने देखते रहता था।

स्कूल से लौटते हुए सलमान और राहुल दीवाली पर ही बातें करते रहते- दीवाली कैसे मनाएँगे, कितने दिन पटाखे चलाएँगे, कौन-कौन से बम खरीदेंगे, चरखी, रॉकेट और फुलझड़ी लेंगे, कहाँ-कहाँ दीये जलाएँगे। दोनों बच्चे बहुत ही ज्यादा उत्साहित थे।

दीवाली के एक हफ्ते पहले रविवार को दोनों बच्चों ने अपने-अपने घरों की सफाई की। रंगाई-पुताई करके घर दीवाली के लिए तैयार कर लिया। बाजार से लाने वाली लिस्ट राघव की पत्नी ने तैयार कर ली थी।

आज धनतेरस थी। सेठ जी की दुकान में बहुत भीड़ थी। उन्होंने राघव को छुट्टी देने से मना कर दिया। तय हुआ कि शाम को दीवाली का सामान लेने सगीर के साथ राहुल और सलमान बाजार जाएँगे। अब दोनों बच्चे शाम का इन्तजार करने लगे। शाम बीत गयी, पर सगीर चाचा नहीं आए। सोचा काम में उलझ गए होंगे। पर जब रात के दस बज गए तो सबको चिंता होने लगी। ग्यारह बजते ही सबका बुरा हाल हो गया। राहुल और सलमान राघव की दुकान की तरफ दौड़े। उन्होंने सारी बातें राघव को बताई– "राघव चाचा, पापा अभी तक नहीं आए, कहाँ होंगे ? क्यों नहीं आये ? समझ नहीं आ रहा।" सलमान रोते हुए बोला।

"अरे बेटा सब ठीक होगा। तुम रुको, मैं अभी सेठ जी से कहकर आता हूँ।" राघव ने कहा और दौड़कर गया, फिर सेठजी से छुट्टी लेकर आया। सबसे पहले ये लोग पास के पुलिस स्टेशन गए और सारी बातें बताई। अब सगीर की खोज होने लगी। सारे पुलिस स्टेशन में इत्तला दे दी गयी।

राघव और बच्चे जैसे ही घर आए, एक महाशय आए। उन्होंने बताया कि फैक्ट्री रोड पर एक रिक्शा चालक का एक्सीडेंट हो गया है। उसके पास से यह पता लिखी बैंक की पास बुक मिली तो हम बताने आ गए।

सुनते ही सब फैक्ट्री रोड दौड़ गए। वहाँ सगीर बेहोश पड़ा था। भीड़ चारों तरफ से घेरे थी, पर कोई मदद नहीं कर रहा था। उसके सर से खून बह रहा था। जल्दी से टैक्सी करके राघव और बच्चे उसे अस्पताल ले गए। तुरन्त उपचार शुरू हुआ। सगीर रात भर बेहोश था।

राघव उसके पास रहा। राघव की पत्नी सगीर की पत्नी को सँभालती रही। सुबह डाक्टर ने बताया कि इनके दिमाग में खून जम गया है, उसका ऑपरेशन करना पड़ेगा। उस पर बीस हजार रुपए का खर्चा आएगा।

सुनकर सगीर की पत्नी सहम गयी। इतना पैसा कहाँ से लाएगी। घर में जो था, वह सब तो खत्म हो चुका था। वह रोने लगी।

राघव ने कहा– "भाभी, जब तक आपका ये भाई है, आपको चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है। आप यहीं रुकें, मैं पैसों का इन्तजाम करके आता हूँ।" उसने डाक्टर से कहा– "आप ऑपरेशन की तैयारी करें।"

राघव ने घर आकर सारी बचत इकट्ठी की, पर पैसा बहुत कम था। उसने अपनी पत्नी से पूछा– "कैसे पैसों का इन्तजाम करें ?" राहुल सुन रहा था। उसने दीवाली के लिए इकट्ठा किए 2500 रुपए लाकर पापा को दिए।

राघव ने कहा– "अरे बेटा, ये पैसे तो तुमने..... !

राहुल बीच में बात काटकर बोला– "हाँ पापा, मैंने दीवाली के लिए ये पैसे इकट्ठा किए थे। पर सगीर चाचा से बढ़कर दीवाली के पटाखे थोड़े ही हैं, आप ये ले लें।" बेटे की सहृदयता देखकर राघव की आँखें भर आईं। पैसे कम पड़े तो अपनी पत्नी के एकमात्र कुंडल सेठजी के पास गिरवी रखकर बीस हजार रुपए राघव ले आया।

सगीर का इलाज शुरू हो गया था। चार दिन तक राघव सगीर के साथ अस्पताल में ही रहा। आज सगीर को होश आ गया था। उसे समझ नहीं आया कि वह कहाँ है, उसने राघव से पूछा– "यार, मैं कहाँ हूँ ? मुझे तो बच्चों के साथ जाकर दीवाली का सामान लाना था। क्या सामान आ गया ? मेरे सर में दर्द क्यों हो रहा है ? पट्टी क्यों बँधी है ?"

राघव ने उसका हाथ पकड़ कर सारी बात बताई और कहा– "सगीर, तुम परेशान मत हो। सब सामान आ गया, ज्यादा मत बोलो। तुम्हें थोड़ी चोट आई है, पर चिंता की कोई बात नहीं है।"

राघव सगीर को सहारा देता रहा। सगीर ने पूछा– "बहुत पैसा खर्च हुआ होगा, कहाँ से आया, दीवाली में मेरे कारण विघ्न पड़ गया, मैं तेरा कर्जदार हूँ राघव।" और भी न जाने क्या-क्या बातें कह रहा था कि राघव ने उसके मुँह पर हाथ रखा और कहा– "देख, यह बातें तो सारी जिन्दगी करते रहना, अभी डॉक्टर ने आराम करने को कहा है। चुपचाप सो जा, मैंने कोई अहसान नहीं किया है, अपना फर्ज निभाया है बस।" सगीर उसको गीली आँखों से देख रहा था।

चार दिन बाद राघव घर आया। सलमान ने कहा– "दीवाली तो निकल गयी चाचा, आप लोग तो अब्बा के कारण ठीक से पूजा भी नहीं कर सके। सामान का पैसा

अब्बा के इलाज में खर्च हो गया। आप बहुत बड़े दिलवाले हैं चाचा, अब्बा के कारण आप लोगों ने दीवाली भी नहीं मनाई।" और सलमान रोने लगा।

राघव ने सलमान को गले से लगाया और कहा– "बेटा, मेरा भाई अस्पताल में जीवन और मौत के बीच संघर्ष कर रहा था तो मैं दीवाली कैसे मनाता। रही पैसों की बात, तो धन की गति सही होनी चाहिए। इस समय पैसों का सही उपयोग मेरे दोस्त की जिन्दगी से बढ़कर कुछ और नहीं था। तुम इन बातों को सोचकर परेशान मत हो मेरे बच्चे !"

आज दस दिन बाद सगीर को अस्पताल से छुट्टी मिली, राघव उसे घर लाया। घर पहुँचने पर राघव ने देखा कि दो दीये उसके घर की दहलीज पर जल रहे थे और दो दीये सगीर की दहलीज पर जल रहे थे। राहुल और सलमान के हाथों में दो-दो फुलझड़ी थीं। हाथ में रोली और अक्षत का थाल लिए उसकी पत्नी और मिठाई का थाल लिए सगीर की पत्नी खड़े थे। जैसे ही सगीर को लेकर राघव टेम्पो से उतरा, बच्चों ने फुलझड़ी जलाकर उनका स्वागत किया। रोली अक्षत लगाकर मिठाई खिलाकर सब एक-दूसरे से दीवाली मिले।

राघव ने बच्चों से पूछा– "क्यों बच्चों, फुलझड़ी और दीये जलाकर मजा आया ?"

"हाँ पापा, बहुत मजा आया।"

"हाँ चाचा, बहुत मजा आया।"

इन लोगों ने दीवाली आज मनाई, क्योंकि इनके घर आज खुशी आई थी। और खुशियों को जाहिर करने का दूसरा नाम त्यौहार है। सच है– "प्यार और अपनत्व के दो दीये दिखावे के सौ दीयों से बढ़कर होते हैं।"

□ 2/62, सी-विशालखण्ड, गोमती नगर, लखनऊ
मो.नं.-9897501069

फिर से हम स्कूल गए

□ राम करन

दिन महीने बीत गए,
फिर से हम स्कूल गए।
मिलकर दर-दीवारों से,
खुशी के मारे फूल गए।

कुर्सी-मेज को झाड़ लगी,
सिर से जाले धूल गए।
हम पुराने दोस्त मिले,
सारे शिकवे भूल गए।

□ अपरा सिटी फेज-4, ग्राम व पोस्ट-मिश्रौलिया,
जनपद-बस्ती-272124 (उ0प्र0), **मो.नं.-** 8299016774

खुशबू वाला दीपक

□ डॉ० अलका जैन 'आराधना'

कोरोना महामारी के प्रकोप में कमी आने के बाद स्कूल खुले तो बच्चों का उत्साह देखते ही बनता था। सब बच्चों ने मास्क लगा रखे थे। सोशल डिस्टेंसिंग के नियमों का पालन भी कर रहे थे। सब दूर-दूर बैठ कर एक-दूसरे से बात कर रहे थे। तभी मैडम ने कक्षा में प्रवेश किया। बच्चों ने खड़े होकर मैडम का अभिवादन किया। अटेंडेंस लेने के बाद मैडम ने बच्चों से बात की। उनके अनुभव जाने कि कोरोनाकाल का मुश्किल समय उन्होंने कैसे बिताया। उसके बाद उन्होंने कहा– "बच्चों ! दीवाली नजदीक आ रही है। स्कूल में दीपक सजाने की प्रतियोगिता रखी गई है। सबके घर में ही उपलब्ध सामान लेकर आने हैं और दीपक सजाना है। जिसका दीपक सबसे सुंदर होगा, उसे इनाम दिया जाएगा।"

मैडम की बात सुनकर टीना ने पूछा– "मैडम ! क्या एक ही बच्चे को इनाम दिया जाएगा ?"

मैडम ने मुस्कुराते हुए कहा– "हाँ, एक ही पुरस्कार रखा गया है- प्रथम पुरस्कार।"

सभी बच्चों में प्रथम पुरस्कार पाने की लालसा जाग गई। पूरे दिन स्कूल में यही चर्चा होती रही कि किस तरह सबसे सुंदर दीपक सजाया जा सकता है ।

अगले दिन सभी बच्चे घर से दीपक सजाने का सामान ले आए थे। लंच के बाद बच्चों को स्कूल के खुले उद्यान में ले जाया गया। वहाँ बच्चों को दूर-दूर बैठाया गया। सब अपना-अपना दीपक सजाने लगे। सबको आधे घंटे का समय दिया गया था।

आधे घण्टे के बाद मैडम ने कहा– "सब बच्चे अपने नाम लगे स्टिकर के साथ सजाए हुए दीपक को सामने वाली टेबल पर रख दें।"

टीना ने बहुत खूबसूरत दीपक सजाया था और उसे पूरा विश्वास था कि प्रथम पुरस्कार उसे ही प्राप्त होगा। उसने टीना नाम का स्टिकर लगाकर अपना बनाया हुआ दीपक टेबल पर रख दिया।

पुरस्कार की घोषणा का समय हुआ तो मैडम ने नाम पुकारा– "प्रथम और एकमात्र पुरस्कार प्राप्त किया है- कक्षा सात की टीना ने।"

मैडम ने देखा कि मास्क लगाए दो लड़कियाँ सामने आ गई थीं। मैडम ने पूछा– "टीना कौन है ?"

दोनों ने एक साथ कहा– "मेरा नाम टीना है।"

मैडम ने दीपक दिखाते हुए पूछा– "यह दीपक किसने सजाया ?"

दोनों ने ही दीप सजाने का दावा किया। किसी ने भी दीपक पर अपना सरनेम नहीं लिखा था।

मैडम को आश्चर्य हुआ। क्योंकि दोनों में से एक लड़की तो झूठ बोल ही रही था। मैडम यही सोच रही थीं कि ऐसा कौन सा तरीका अपनाया जाए, जिससे यह पता चल सके कि कौन झूठ बोल रहा है ? मैडम को उस दीपक में से बहुत अच्छी सुगंध आ रही थी। उन्हें तुरंत एक तरकीब सूझी। दोनों लड़कियों को एक-एक करके अपने पास बुलाया और बिना कुछ कहे वापस भेज दिया।

उसके बाद मैडम ने कहा– "पहले कक्षा सात में टीना नाम की एक ही लड़की थी। दूसरी टीना का इसी साल एडमिशन हुआ है।" फिर मैडम उस लड़की के पास जा खड़ी हुई, जिसके पास से चंदन की महक आ रही थी, उसने दीपक को सजाने में चंदन की मोतियों का प्रयोग किया था, इसलिए उसके हाथ चंदन की खुशबू से महक रहे थे। मैडम ने उसे शाबासी देते हुए पुरस्कृत किया।

दूसरी टीना ने अपनी गलती मानते हुए कहा– "मैंने ऐसा इसलिए किया, ताकि मुझे प्रथम पुरस्कार मिल सके।"

मैडम ने उसे समझाया– "उसी पुरस्कार की महत्ता होती है, जो मेहनत और ईमानदारी से प्राप्त किया जाए।"

टीना को बात समझ में आ गई थी। उसने फिर कभी ऐसा न करने का संकल्प लिया।

□ फ्लैट नं.-1,प्लॉट नं.-118/119, उत्सव रेजिडेंसी, गायत्री नगर-बी, महारानी फार्म, दुर्गापुरा, जयपुर-302018, **मो.नं.**-9828037056

उछलतू की दिवाली

□ डॉ० मंजरी शुक्ला

"तुम्हारा मुँह हर साल दिवाली के समय पर बया के घोंसले सा लटक जाता है।" मोंटू बन्दर ने एक डाल से दूसरी डाल पर झूलते हुए कहा।

"हे हे हे, मेरी तो हँसी ही नहीं रुक रही है।" छुपन कछुए ने अपने खोल में छुपते हुए कहा ।

फुदकी गौरैया जोरों से हँस पड़ी और बोली– "जब से छुपन के ऊपर ईंटा गिरा है, तब से वह कई बार एक ही बात दोहराया करता है।"

मोंटू हँसता हुआ बोला– "पर जिसका मुँह सड़े हुए पपीते की तरह दिख रहा है, उससे तो पूछो कि क्या हुआ है ?"

"बता भी दो, क्या हुआ है ?" फुदकी ने फुदकते हुए पूछा।

"दिवाली के लिए सब फुलझड़ी और चकरी लेने शहर जा रहे हैं, पर मुझे कोई नहीं ले जा रहा।" उछलतू कंगारू ने दुखी होते हुए कहा।

"लो भला, ये क्या बात हुई। हर साल बेचारे उछलतू को सब जंगल में घरों की देखभाल करने के लिए छोड़ जाते हैं।" फुदकी ने कहा।

"नहीं, नहीं... घरों की देखभाल के लिए नहीं छोड़ते। वह उछलते हुए चलता है न, इसलिए कोई उसे अपने साथ नहीं ले जाता।" पीहू कोयल पत्तों के झुरमुट से मधुर स्वर में बोली।

"हेहेहे, मेरी तो हँसी ही नहीं रुक रही है।" छुपन कछुए ने अपने खोल के अंदर से कहा।

"अगर मुझे वह ईंटा मिल जाए न तो मैं छुपन को दोबारा मार दूँगा।" मोंटू अपने दाँत किटकिटाते हुए बोला।

तभी वहाँ से करतबी भालू, फुर्सति गिलहरी और छुपाऊ चूहा निकले। करतबी भालू ने जैसे ही तीन-चार लोग देखे तो तुरंत करतब दिखाना शुरू कर दिया। फुर्सति गिलहरी बोली– "बस, तुम्हें कोई दिख भर जाए तो तुम तुरंत मटकने लगते हो।"

"और क्या, मुझे देखो, मैंने कुछ छुपाया क्या ?" छुपाऊ ने अपनी लम्बी पतली पूँछ हिलाते हुए कहा। ये बात और है कि इतनी ही देर में छुपाऊ ने कुछ बीज मिट्टी के अंदर छुपा दिए थे।

मोंटू बोला– "उछलतू को भी ले जाओ। उसका तुम सबके साथ जाकर शहर देखने का बहुत मन है।"

"नहीं, नहीं, बिलकुल नहीं !" फुर्सति गिलहरी बोली, जो अब तक फुर्सत में बैठ चुकी थी। तभी अकड़ू लोमड़ी, हँसोड़ मगरमच्छ और नखरीला चीता भी वहाँ आ गये। करतबी बोला– "चलो, अब जल्दी से शहर चलें, पहले ही बहुत देर हो चुकी है।"

नखरीला बोला– "सब मेरी पसंद वाली दुकान से ही दिए लेंगे, वरना मैं नहीं जाऊँगा।"

नखरीला के घर का आँगन बहुत बड़ा था और सब वहीं आकर फुलझड़ी जलाते थे, इसलिए उसके नखरे तो मानने ही पड़ते थे। सभी ने तुरंत नखरीला की बात मान ली। तभी नखरीला की नजर हँसोड़ पर पड़ी और वह गुस्से से बोला– "तुम क्या मुझ पर हँस रहे हो ?"

"मेरा मुँह ही ऐसा बना है कि जरा सा मुँह खोलते ही हँसता हुआ नजर आता हूँ।" हँसोड़ बोला।

"हेहेहे, मेरी तो हँसी ही नहीं रुक रही है।" छुपन कछुए ने अपने खोल के अंदर से कहा।

छुपन की बात सुनते ही वहाँ जोरदार ठहाका गूँजा और सब हँसने लगे।

"उछलतू को भी ले जाओ।" मोंटू ने सबको देखते हुए कहा।

"नहीं, ये बहुत उछलता है और एक बार ये बहुत आगे निकल गया था। हम लोग दौड़-दौड़ कर अधमरे हो गए, पर फिर भी इसे नहीं पकड़ पाए।" हँसोड़ ने दुखी होते हुए कहा।

उछलतू की आँखों में आँसू आ गए। उसने सबसे छुपाकर आँसू पोंछ लिए। सबके जाने के बाद उछलतू थोड़ी देर तक तो बैठा रहा, फिर वहाँ से चला गया।

दिन भर खरीदारी और हँसी मजाक करने के बाद सभी को लौटने में रात हो गई। जब वे मोंटू के पेड़ के पास से निकले,

तो मोंटू पेड़ से ही चिल्लाया– "तुम लोगों को जल्दी लौटना चाहिए था। अब अँधेरे में कहीं गिर न पड़ना, कि हम दिवाली भी न मना पाएँ।"

"खूब धूमधाम से मनाएँगे। पूरे थैला भरके दिये लिए हैं जलाने को !" करतबी बोला।

अगले दिन मोंटू और फुदकु के साथ-साथ सभी दोस्त नखरीला के घर दिन में ही पहुँच गए। पीहू बोली– "जल्दी से हमारे दिये हमें दे दो, ताकि हमारा घर भी शाम से ही जगमगा उठे।"

नखरीला ने ये सुनकर सिर झुका लिया। "अरे, क्या हुआ ?" मोंटू ने पूछा।

नखरीला ने खाली झोला दिखाया, जिसमें एक तरफ बड़ा सा छेद था। वह रुँआसा होते हुए बोला– "सारी फुलझड़ी, चकरी और दिए रास्ते में ही कहीं गिर गए।"

सभी सन्न रह गए। फुर्सति रुलाई रोकते हुए बोली– "दिवाली के दिन भी हम सभी के घरों में अँधेरा रहेगा।"

सबके चेहरों पर निराशा के भाव आ गए और मोंटू तो फूट-फूटकर रोने लगा। जैसे ही वे अपने घर जाने को हुए, उन्हें उछलतू आता हुआ दिखाई दिया। उसके आने पर पीहू ने धीरे से कहा– "इस बार पटाखे और दिये नहीं होने के कारण दिवाली नहीं मना पाएँगे।"

उछलतू ने सबको देखा और तुरन्त अपने थैले से सारे पटाखे और दिये निकालकर जमीन पर रख दिए।

"ये...ये ...कहाँ...कैसे ?" नखरीला के मुँह से खुशी के मारे शब्द ही नहीं निकल रहे थे।

"तुम लोग मुझे नहीं ले गए तो मैं जंगल की सीमा तक तुम्हारे पीछे गया था। अचानक ही मुझे अपनी बेबसी पर बहुत रोना आया और मैं बहुत देर तक रोने के बाद वहीं सो गया। रात होने पर जब मेरी आँख खुली और मैं वापस लौटने लगा, तो मुझे ये सब रास्ते में पड़े हुए दिखे। मैं समझ गया कि ये तुम लोगों से गिर गए हैं।"

मोंटू उछलता हुआ चीखने लगा और उछलतू के गले से लग गया। जहाँ थोड़ी देर पहले तक सब मुँह लटकाए बैठे थे, अब वहाँ हँसी ठहाकों की आवाज आ रही थी। सब उछलतू के चारों ओर नाचते-कूदते हुए घूम रहे थे। इतना प्यार देखकर उछलतू खुशी के मारे पागल हुआ जा रहा था।

पहली बार छुपाऊ और कुछ नहीं छुपाकर अपने खुशी के आँसूं छुपा रहा था। उसी ने तो उछलतू को रोता हुआ देखकर थैले को कुतर दिया था।

□ क्वार्टर नं.-डी-1433, इंडियन ऑयल कारपोरेशन लिमिटेड, रिफाइनरी टाउनशिप विलेज एण्ड पोस्ट-बहोली, पानीपत-132140 हरियाणा।
मो.नं.-9616797138

साथ तुम्हारा लगे सुहाना

□ डॉ० पुष्पलता

तितली एक फूल से बोली,
आओ खेलें आँख-मिचौली।
मैं उड़ जाऊँ मुझको ढूँढ़ो,
फिर आ जाऊँ बन हमजोली।

फूल लजाया, फिर मुस्काया,
अपनी शाखा पर लहराया।
तितली उसको छूकर भागी,
वो बेचारा भाग न पाया।

तितली बोले मुझको पकड़ो,
फूल कहे न ऐसे अकड़ो।
मैं उड़ सकता नहीं पता है,
शाखा से मेरा रिश्ता है।

रंग-बिरंगी तितली रानी,
तुम तो हो जानी पहचानी।
मेरी पीड़ा समझ न पाओ,
उड़-उड़ मेरी हँसी उड़ाओ।

तितली बोली मुँह न मोड़ो,
बिना वजह का गुस्सा छोड़ो।
तुम हो मेरे दोस्त अनूठे,
बेमतलब की बात पे रूठे।

आस-पास ही डोल रही थी,
उड़ने को कब बोल रही थी।
रात हुई अब सो जाऊँगी,
सुबह तो फिर वापिस आऊँगी।
फूल कहे कल वापिस आना,
साथ तुम्हारा लगे सुहाना।

□ 253/प्रथम, साउथ सिविल लाइन, मुजफ्फरनगर-251002, मो.नं.- 9810350330

झोपड़ी में खिलखिलाए दीप

□ ललित शौर्य

ओजस को हर वर्ष दिवाली का बड़ा इन्तजार रहता था। वह दिवाली के दिन खूब मस्ती करता था। साल भर दिवाली के लिए रुपये जमा करता। इन जमा पैसों से खूब पटाखे खरीदता। पूरे मोहल्ले में सबसे देर तक पटाखे फूटने की आवाज ओजस के घर से ही आती थी। दूसरे दिन बच्चे उसकी खूब तारीफ करते, कहते– "ओजस कल तो तुमने कमाल कर दिया। रात भर पटाखे छुड़ाते रहे।"

ओजस को अपनी तारीफ सुनकर बड़ा आनंद आता था।

ओजस के मम्मी-पापा उसे समझाते कि सारे पैसे आतिशबाजी में बर्बाद करना बेवकूफी है। लेकिन ओजस कहाँ सुनता। वह घरवालों से एकमुश्त पैसे नहीं माँगता था। ये उसकी साल भर की जमा पूँजी होती थी, इसलिए भी घर वाले बहुत ज्यादा जोर देकर मना नहीं कर पाते थे।

इस वर्ष भी ओजस ने लगभग पाँच हजार रुपए जमा किए हुए थे। उसे रुपए कैसे खर्च करने हैं, उसने पूरी योजना बना ली थी। पहले दिन वह सिर्फ पाँच सौ के पटाखे छुड़ाएगा। उसके बाद महालक्ष्मी वाले दिन पूरे साढ़े चार हजार की आतिशबाजी ले आएगा। क्योंकि महालक्ष्मी वाले दिन ही मोहल्ले में खूब आतिशबाजी होती थी। उसे इस दिन दोस्तों को अपनी आतिशबाजी दिखाकर वाहवाही लूटनी थी।

जिसका इन्तजार था, आखिर वह दिन आ ही गया। दिवाली के पहले दिन ओजस ने पटाखे खरीदने के लिए बाजार जाने का मन बनाया। उसने मम्मी से पूछा–

"मम्मी, मुझे पटाखे लेने बाजार जाना है। मेरे दोस्त भी जा रहे हैं। क्या मैं जा सकता हूँ ?"

"ओजस तुम पिछले तीन-चार सालों से हजारों रुपए के पटाखे खरीद रहे हो। अपने साल भर से जमा सारे रुपए पटाखों में बर्बाद कर देते हो। आखिर धुँए और शोर के अलावा क्या मिलता है तुम्हें ?" मम्मी ने कहा।

"मुझे अच्छा लगता है। फिर मेरे दोस्त मेरी तारीफ भी तो करते हैं। मैं जा रहा हूँ, प्लीज जाने दो।" ओजस ने मम्मी से कहा।

"बेवजह की तारीफों के लिए पर्यावरण को नुकसान पहुँचाना धन की बर्बादी है। तुम इन रुपयों से कुछ अच्छा भी कर सकते हो। किसी की मदद कर सकते हो।" मम्मी ने समझाते हुए कहा।

"देखो, नितिन गेट तक आ पहुँचा है। मुझे अब तो जाने दो।" मम्मी की बातों को अनसुना करते हुए ओजस ने कहा।

"ठीक है... ठीक है... जो तुम्हें ठीक लगे, वह करो।" मम्मी ने खींझते हुए कहा।

ओजस, नितिन और दो अन्य दोस्तों के साथ बाजार चला गया। बाजार पूरा सजा हुआ था। जगह-जगह पटाखे सजे हुए थे। शाम का समय था। दुकान वालों ने रंग-बिरंगी लड़ियाँ भी जला ली थीं। पूरा बाजार दमक रहा था। ओजस और उसके दोस्त बड़े उत्साहित थे।

ओजस और उसके साथियों ने आज ज्यादा खरीददारी नहीं की। आज उन्होंने बस बाजार घूमने का मन बनाया था। बाजार घूमते-घूमते शाम हो गई थी। ओजस ने अपनी योजना के अनुसार आज पाँच सौ रुपए के ही पटाखे खरीदे। ज्यादा रुपए कल के लिए रख लिए थे।

अब ओजस और उसके दोस्त घर की ओर जाने लगे। सभी बाजार की रौनक के बारे में बात कर रहे थे। बाजार से घर के बीच जितने भी घर थे, सभी रोशनी से नहाए हुए थे। ओजस की दृष्टि सड़क के पार कुछ घरों पर पड़ी, जो झोपड़ीनुमा थे। वहाँ बिलकुल भी रौनक नहीं थी। न तो वहाँ कोई रोशनी थी, न चहल-पहल। ये देखकर ओजस को बड़ा अजीब लगा। त्यौहार के दिन ऐसा सूनापन उसे अखर रहा था।

"नितिन उन घरों को देखो। वहाँ एक भी दिया जलता नहीं दिख रहा। दिवाली में भी अन्धकार छाया हुआ है।" ओजस ने बुझे मन से कहा।

"वे गरीब लोग हैं। उनके पास खाने के लिए रुपए नहीं होते। भला वे कैसे त्यौहार मनाएँगे।" नितिन ने कहा।

नितिन की बात सुनकर ओजस को मम्मी की बात याद आ गई। इससे किसी की मदद की जा सकती है। ओजस ने अब निर्णय ले लिया था। उसने नितिन और अपने अन्य दोस्तों से कहा– "कल ये झोपड़ियाँ भी रौशनी से नहाएँगी। यहाँ भी जगमग दीप जलेंगे।"

"वो कैसे ?" नितिन ने कहा।

"कल बताऊँगा। तुम सब कल शाम 5 बजे मिलना। हमें कल भी बाजार चलना है।" ओजस ने कहा।

ओजस और नितिन का घर आ चुका था। सभी दोस्तों ने एक दूसरे से विदा ली।

घर पहुँचने पर मम्मी ने ओजस से कहा– "ले आए पटाखे। अब फिर से शोरगुल और धुँआ शुरू हो जाएगा।"

ओजस मुस्कुराया। कुछ न बोला। उसने खाना खाया और सीधे अपने कमरे में चला गया। वह कल की योजना बनाने लगा। उसके पास अभी साढ़े चार हजार रुपए बचे थे। साथ ही जो सामान आज वह खरीद कर लाया था, वह भी था। उसने वह सामान भी बाँटने का निर्णय ले लिया।

अगले दिन शाम होते ही ओजस अपने दोस्तों के साथ बाजार चला गया। बाजार पहुँचते ही मिट्टी के दिए, तेल की बोतलें, बाती, खील, बताशे, फुलझड़ियाँ खरीदीं। सारे रुपए इन्हीं चीजों में खर्च कर दिए।

उसके दोस्त बड़े आश्चर्य से ओजस की ओर देख रहे थे। नितिन ने कहा– "क्या बात है ? आज तुम पटाखे नहीं खरीद रहे हो ?"

"नहीं, इस बार मैं पटाखे नहीं खरीदूँगा।" ओजस ने कहा।

"तो क्या करोगे ? और ये सब सामान किसके लिए है ?" नितिन ने पूछा।

"चलो मेरे साथ, सब बताता हूँ।" ओजस ने दोस्तों से कहा और वह सब घर की ओर चल दिए।

जब वे ठीक उस स्थान पर पहुँचे, जहाँ पर झोपड़ियाँ थीं, तो ओजस ने सब को रोक लिया।

उसने दोस्तों से कहा– "ये सारा सामान इन्हीं लोगों के लिए है। चलो बाँट आते हैं।"

ओजस, नितिन और उसके दोस्तों ने सड़क पार की। वे सब उन कच्चे घरों के पास पहुँचे। वहाँ बच्चे, बूढ़े सभी थे। ओजस और उसके दोस्तों ने सभी को प्रणाम किया। दिवाली की शुभकामनाएँ दी। साथ ही सारा सामान भी बाँट दिया। सामान पाकर वे सभी लोग बहुत खुश हुए। उन्होंने बच्चों को खूब आशीर्वाद दिया।

सामान बाँटकर ओजस को बहुत अच्छा लग रहा था। ऐसा आनंद तो उसे पटाखे जलाकर भी नहीं मिलता था। उसके दोस्तों ने ओजस से कहा– "अगली बार से वे सब भी ऐसा ही करेंगे।"

सभी दोस्त घर को चल दिए। जैसे ही ओजस घर पहुँचा, मम्मी ने उसे खाली हाथ देख कर पूछा– "क्या बात है। कहाँ हैं, तुम्हारे पटाखे। कहीं रुपए गुम तो नहीं कर दिए। कुछ खरीदा क्यों नहीं ?"

"खरीदा न माँ। खुशियाँ खरीदीं।" ओजस ने मुस्कुराते हुए कहा।

"क्या मतलब, मैं कुछ समझी नहीं।" मम्मी ने कहा।

ओजस ने मम्मी को सारी बात बता दी। उनके घर से झोपड़ियाँ साफ दिखाई देती थीं। ओजस ने उन झोपड़ियों में जलते दिए दिखाए। ये सब सुनकर और देखकर मम्मी की आँखों में आँसू आ गए। उन्होंने ओजस को गले से लगा लिया। "यही सही मायने में दिवाली है बेटा। तुमने बहुत अच्छा काम किया है। मुझे गर्व है तुम पर। ये खुशियों के दीप आजीवन जलते रहेंगे।"

इसके बाद ओजस और मम्मी घर की सीढ़ियों पर दिये जलाने लगे।

☐ ग्राम + पोस्ट-मुवानी, जिला-पिथैरागढ़, उत्तराखण्ड।
मो.नं.-7351467702

फिर आई दीवाली है

☐ श्याम नारायण श्रीवास्तव

धूम धड़ाका फटा पटाखा,
फिर आयी दीवाली है।

सारे घर को साफ है करना
वहाँ जहाँ पर नाली है।
खिड़की दरवाजे के शीशे,
और लगी जो जाली है।

पापा खूब मिठाई लाये,
फूल को लाया माली है।
खील बताशा लाई चूरा,
माँ भर लायी थाली है।

हुई गणेश लक्ष्मी पूजा,
अब आरती होने वाली है।
हर कोने में दीपक रखना,
देखो जहाँ भी खाली है।

कहीं अँधेरा नहीं रहेगा
आज की रात निराली है
धूम-धड़ाका फटा पटाखा
फिर आयी दीवाली है।

☐ 3532, विवेक नगर, सुल्तानपुर-228001 (उ0प्र0)
मो.नं.- 7999652646

पानी का मूल्य

□ डॉ० शोभा अग्रवाल चिलबिल

"पानी फेंक दो, फिर खाली बोतल से कैच–कैच खेलेंगे।"

"नहीं-नहीं, पानी मत फेंको, पानी बहुत कीमती होता है।"

"अरे पागल हो क्या ? पानी की भी कहीं कोई कीमत होती है ?"

"हमारे घर में तो पानी बहता रहता है, कोई खर्च नहीं होता है।"

"अगर पानी न मिले तो क्या हो ?"

"अच्छा चलो कुछ और खेला जाए, फालतू बातें करने से क्या फायदा ?"

बच्चे खेलने लगते हैं । पार्क में बैठी हुई सुलभा जी यह सब सुन रही थीं। सोचने लगीं, यदि अभी से सही बात इनके दिमाग में ठीक प्रकार से बैठा दी जाए तो समाज का कम से कम कुछ हिस्सा तो सुधर ही जाएगा । उन्होंने बच्चों को अपने पास बुलाया, बैठाया और प्यार से बोलीं– "अगर तुम्हारे पास केवल दस रुपए हैं, और तुम किसी ऐसी जगह पर हो, जहाँ दस रुपए में केवल पानी मिले या केवल खाना मिले तो तुम क्या लोगे ?"

"पानी लेंगे।" एक बच्चा बोला।

"क्यों ?"

"अगर पानी नहीं पिएँगे तो मर भी सकते हैं। बिना खाए तो फिर भी कुछ दिन रह सकते हैं।" यह बात राजू ने कही, जो कह रहा था कि पानी बहुत कीमती होता है।

"और यदि तुम्हारे पास दस रुपए भी न हों, और तुम्हें बहुत तेज प्यास लगी हो तब ?" सुलभा जी ने पूछा ।

"तो मैं ढाबे वालों के बरतन माँज दूँगा।" रवि ने कहा। "बरतन माँजना तुम्हें आता भी है ?" गुंजन ने रवि को चिढ़ाते हुए कहा।

"बरतन न माँज पाने की स्थिति में मैं अपनी कमीज उतार कर दे दूँगा।" राजू बोला।

"इसका मतलब पानी तुम्हारी कमीज से मँहगा है।" सुलभा समझाते हुए बोली।

"हाँ आँटी ! पानी तो हर चीज से मँहगा हुआ, क्योंकि हम जान बचाने के लिए पानी का कोई भी दाम चुकाने के लिए तैयार हो जाएँगे।" गुंजन ने राजू से पहले ही बोल दिया।

"सचमुच, पानी बहुत कीमती होता है। मैं फालतू में ही रवि से पानी फेंकने को कह रहा था।" पंकज को अपनी गलती का एहसास हुआ।

"तो अब कभी पानी मत बर्बाद करना।" सुलभा को खुशी हुई कि बच्चों को पानी का महत्त्व अच्छी तरह से समझ में आ गया। "हम कभी पानी बर्बाद नहीं करेंगे।" सभी बच्चे एक स्वर में बोल पड़े।

□ आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली।
मो.नं.-8882161295

नन्हीं

□ राजकुमार जैन राजन

जब नन्हीं को नींद न आती।
शोर मचाकर हमें जगाती।।

नहीं सुनें गर बातें उसकी,
खींच खींच कर बाल उठाती।

तुतलाती भाषा में बोले,
माँ क्यों लोरी नहीं सुनाती।

तब गोदी में लेकर माता,
घुटने पर वो उसे सुलाती,

हिलते-हिलते घुटना रुकता,
आँख मूँद नन्हीं चिल्लाती।

डर जाती है माता उसकी,
तब वो गालों को सहलाती।

सोया राजन, गुड़िया सोजा,
थपकी दे उसको समझाती।

□ चित्रा प्रकाशन, अकोला-312205 (चित्तौड़गढ़), राजस्थान।
मो.नं.- 9828219919

अहा जली कन्दील जली

□ डॉ० राहिताश्व अस्थाना

अहा जली कन्दील जली।
लगती कितनी भली-भली।।

रंग-बिरंगी रोशनियों
से ज्योति है गली-गली।

यह प्रकाश के घर जन्मी
झलमल करती शोख लली।।

मेहनत करने वालों के
घर खेली और बढ़ी पली।

रंग-बिरंगे कागज की
पहन नई पोशाक चली।।

नभ की तममय बगिया में
यह अनुपम है ज्योति कली।।

कन्दीलों के आँगन में
हँसती दीपों की अवली।।

□ निकट-बावन चुंगी चौराहा, हरदोई-241001 (उ.प्र.)
मो.नं.- 7607983984

लो फिर से आ गई दिवाली

□ डॉ० देशबन्धु शाहजहाँपुरी

मन में उठी उमंग निराली।
लो फिर से आ गई दिवाली।।

कहीं बताशे, कहीं मिठाई,
खील खिलौने मम्मी लाई।
चुनमुन देख देख ललचाए,
उसके मुँह में पानी आए।
दादी जी करतीं रखवाली।
लो फिर से आ गई दिवाली।।

भू पर छुटे अनार-फव्वारे,
नभ में उड़ते राकेट प्यारे।
पड़े बमों की धाँय सुनाई,
बच्चों ने फुलझड़ी चलाई।
फिरकी नाचे हो मतवाली।
लो फिर से आ गई दिवाली।।

टिम टिम करते तारे जैसे,
घर घर जलते दीपक ऐसे।
डरकर भाग गया अँधियारा,
आया एक नया उजियारा।
सभी ओर छाई खुशहाली।
लो फिर से आ गई दिवाली।।

□ आनंदपुरम कॉलोनी (बीबीजई चौराहा), निकट जय जय राम आटा चक्की, शाहजहाँपुर-242001
मो.नं.- 9936604767, 9415035767

आज दिवाली है आई

□ डॉ० राकेश चक्र

देखो मौसम बड़ा सुहाना
आज दिवाली है आई।
खुशियों से मन बाग-बाग है
घर-घर है जगमग भाई।।

खूब स्वाद पकवान बने हैं
चमचम, बर्फी रसगुल्ला।
गरम कचौड़ी, दही मँगौड़ी
छक-छक के खाता लल्ला।।

फुलझड़ियों की जगर-मगर से
खुशियाँ बाँटें सब बच्चे।
जो कि पटाखे नहीं चलाएँ
वे बच्चे सबसे अच्छे।।

करें पटाखे बहुत प्रदूषण
मर जाती है ऑक्सीजन।
साँस-साँस में जहर आ घुले
रोगों से घिरता जीवन।।

सुनो पटाखे हम सबको ही
बने काल गहरी खाई।
देखो मौसम बड़ा सुहाना
आज दिवाली है आई।।

□ 90-बी, शिवपुरी, मुरादाबाद-244001 (उ.प्र.)
मो.नं.- 9456201857

आ गई दिवाली

□ चक्रधर शुक्ल

कूड़ा-करकट मत फैलाओ
घर-आँगन को स्वच्छ बनाओ
दूर भगाकर अधकार को
दीप जलाओ, दीप जलाओ।

मुँह में अपने मास्क लगाओ
निश्चित दूरी को अपनाओ
वैक्सीन लगवाकर साथी
हिल-मिल कर त्योहार मनाओ।

खील-खिलौना घर में लाओ
माँ-गणेश का भोग लगाओ
याचक जब भी द्वारे आए
उसको खाली मत लौटाओ।

स्वागत में सबके मुस्काओ
दोपों से घर-द्वार सजाओ
घर-बाहर होगा उजियाला
बच्चों तुम फुलझड़ी छुड़ाओ।

□ एल.आई.जी.-1, सिंगल स्टोरी बर्रा-6, कानपुर-208027
मो.नं.- 9455511337

स्वामी, मुद्रक व प्रकाशक सन्ध्या तिवारी, निदेशक, इण्डिया लिटरेसी बोर्ड, साक्षरता निकेतन, लखनऊ द्वारा इण्डिया लिटरेसी बोर्ड, लखनऊ के लिए अवध पब्लिशिंग हाउस, पानदरीबा, लखनऊ से निःशुल्क वितरण हेतु मुद्रित तथा इण्डिया लिटरेसी बोर्ड, साक्षरता निकेतन, पोस्ट-मानस नगर, कानपुर रोड, लखनऊ-226023 से प्रकाशित।

सम्पादक : लायक राम मानव